राजेश प्रकाशन
कृष्णनगर दिल्ली - ५१

योअर्स फेथफुली

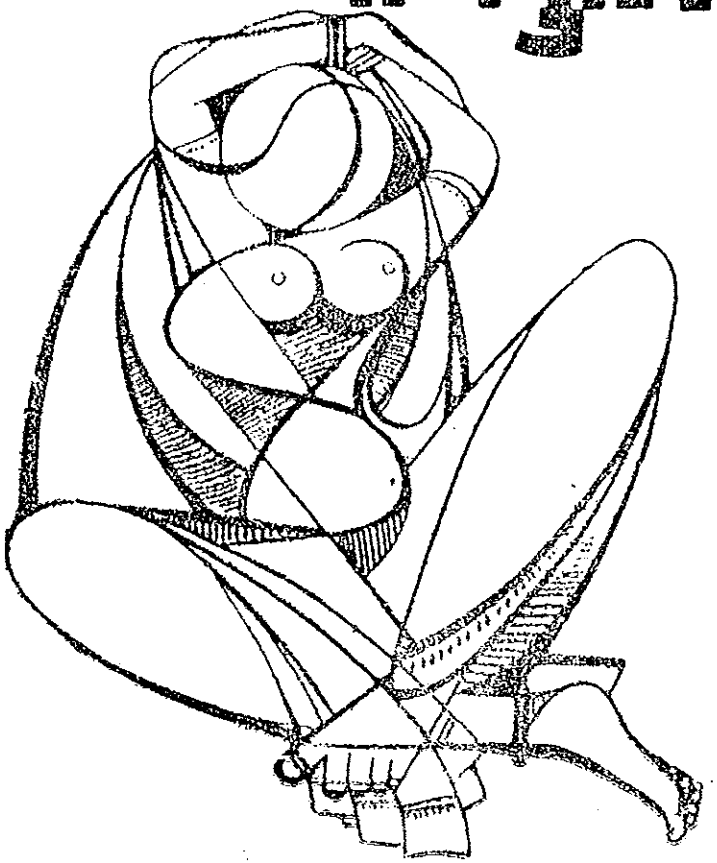

मुद्राराक्षस

कीमती आनन्द को

"तुम्हें जब भी देखना चाहा,
एक लड़ाई दिखाई दी है।"

मूल्य : दस रुपया

प्रकाशक : इन्द्रेश राजपूत
संचालक राजेश प्रकाशन,
डी० 4/20 कृष्ण नगर, दिल्ली–110051

आवरण : इन्द्रेश सुशील

मुद्रक : संगम प्रिंटिंग सर्विस कम्पनी शाहदरा दिल्ली–32.

YOURS FAITHFULLY (Social Play)
by : MUDRA RAKSHASA

मुद्राराक्षस : जन्म २१ जून १९३१, एम० ए०।

नौकरियाँ : कई पत्र-पत्रिकाओं में स्वतंत्र रूप में लेखन एवं सम्पादन, 'ज्ञानोदय' (पत्रिका) कलकत्ता के सम्पादक, १९६३ से आल इन्डिया रेडियो नई दिल्ली में ! साथ ही १९६८ से आकाशवाणी कर्मचारी महासंघ के अध्यक्ष।

प्रकाशित नाटक : योर्स फेथफुली, मरजीवा, तेन्दुआ, तिलचट्टा।

अप्रकाशित नाटक : डाकू, मालविकाग्निमित्र और हम।

सम्पर्क सूत्र : राजेश प्रकाशन
डी ४/२० कृष्णनगर, दिल्ली-११००५१

विशेष : इस नाटक को अभिनय, प्रदर्शन, संग्रह, अनुवाद, फिल्मीकरण अथवा किसी भी प्रकार के सामाजिक उपयोग के लिए लेखक अथवा प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति आवश्यक है।

भूमिका

सितंबर १९६८ में केन्द्रीय सरकारी कर्मचारियों ने हड़ताल की थी। हड़ताल के नेताओं ने उन दिनों चाहा था कि उनके लिए मैं एक नाटक लिख दूँ। लिखने की सोची भी थी लेकिन उस हड़ताल के साथ जुड़ी घटनाओं में इतनी तीव्रता थी कि भाषा मुझे उनसे छोटी लगती रहीं। काफ़ी अरसे तक चाह कर भी कुछ नहीं लिखा गया।

अब सोचता हूँ, अच्छा हुआ कि तब नहीं लिखा था। जिस घटना से मानवीय नियति का सीधा रिश्ता हो, उस घटना पर यों भावुक होकर कुछ लिख देना, उस घटना की ऐतिहासिकता को छोटा करना होता है। साल दो साल के अन्तराल के बाद उस हड़ताल की सामाजिक ऐतिहासिकता ज़्यादा साफ दीखने लगी। वे डरे चेहरे जो ऐसी जगह चुनकर खड़े होते थे जहाँ से तुरन्त, पुलिस आने पर भागा जा सके, टूटन भरी बेशर्मी ओढ़े हुए लोग जो पिछले दरवाजों से दफ्तर जाकर अपनी छोटी सी दुनिया सुधार लेना चाहते थे, वे उत्तेजित लोग सिर्फ इसलिए जुलूसों में आ गए थे कि जो कुछ हो रहा था उससे उन्हें एतराज़ था—वे सब दिखाई देने लगे।

१९७० में 'योर्स फेथफुली' का पहला ड्राफ्ट तैयार हो गया। पूरे दो बरस बाद इसका वर्तमान रूप सामने आया। पहले ड्राफ्ट में नाटक के पात्रों में से ऐसा कोई भी नहीं था जो किसी भी स्तर पर बाहर होने वाले संघर्ष से जुड़ता हो, या कम से कम, संबोधित तो होता ही हो। नियाज

हैदर ने वह प्रारूप सुना और फिर झगड़ा हुआ। उन्हें लगा कि इन पात्रों में से किसी एक को कभी न कभी मुट्ठी कस लेनी चाहिए।

दूसरे और अन्तिम प्रारूप में स्थितियों की बारीक परतों तक जाते जाते वह सहज ही हो गया। पहला क्लर्क, जिसका एक हाथ कटा हुआ है और जिसका हाथ व्यवस्था की यांत्रिकता से उलझ कर कटा है, वह धीरे धीरे उस एक झंडे को अपना हाथ मान लेता है जो बाहर किसी निहत्थे आन्दोलनकारी के हाथों से गिर गया था। झंडे का रंग लाल है। किसी के खून में लिथड़ने के बाद उसका दूसरा रंग हो भी क्या सकता है ?

हिन्दी में अभी आधुनिक नाटक की समझ कम ही पैदा हुई है। हिन्दी में ही क्या हिन्दुस्तान की अंग्रेजी में भी। आम तौर पर हिन्दुस्तानी भाषाओं में लिखे नाटकों की समीक्षा अंगरेज़ी में ही होती है और इस समीक्षा की समझ छात्रोपयोगी से ज़्यादा कुछ नहीं ही है। समीक्षाओं को पढ़कर लगता है कि आज के नाटककार के नाम पर बर्नार्ड शॉ से अधिक उनके लिए कुछ नहीं गोकि नाम आयनेस्को का भी लिया जाता है और ब्रेख़्त का भी।

'नाटक में कसाव की कमी है', 'कथानक बाँधता है या पकड़ता है', 'नाटक ढीला है', 'नाटक में बिखराव है', जैसे वाक्य किसी भी समीक्षा में देखने को मिल जायेंगे। इन वाक्यों का विधा के अन्तरंग से कोई रिश्ता नहीं। स्कूल की उम्र से सीखा शब्द-गठन आज तक चला आ रहा है। यही वजह है कि इन समीक्षकों में से आम तौर पर सभी सिर्फ दैनिकों-साप्ताहिकों में समीक्षाएँ ही लिखते रहे हैं। उन्होंने नाट्य विधा का सुचिन्तित-विवेचन कभी नहीं किया।

इस शब्दावलि में थोड़ी सी समसामयिक अवधारणाएँ भी कभी-कभी शामिल कर ली जाती हैं जैसे 'तनाव' 'भावबोध'। ये इतनी एवस्ट्रैक्ट अवधारणाएँ हैं कि इनका प्रयोग न सिर्फ आसान है बल्कि सुरक्षित भी। किसी भी स्थान पर इस तरह के शब्दों का प्रयोग बिना विवेक-स्खलन का खतरा उठाए किया जा सकता है। शब्दों का प्रयोग इसी तरह हुआ है।

यही वजह है कि नाट्य समीक्षकों ने न तो नए नाटक की कोई परिभाषा की है और न ही दर्शक के संस्कार को मॉंजा है। आज भी 'चुस्त कथोपकथन' वाले कसाव युक्त कथानकों के नाटक ही नए नाटक बने चले आ रहे हैं।

साहित्य की अन्य विधाओं के विपरीत नाटक की भाषा मूलतः अर्थ सीमित नहीं होती। कविता की भाषा जहाँ किसी हद तक गणितीय सतर्कता के साथ अर्थानुसरण करती है वहाँ नाटक की भाषा काफ़ी हाशिया छोड़ देती है। वह सम्पूर्ण, उद्दिष्ट अर्थ सीधे पाठक-दर्शक तक नहीं पहुँचाती। उदाहरणार्थ एक वाक्य लीजिए : "उसने दबे हुए क्षोभ से कहा—मुझे कुछ नहीं कहना।" इसे और अधिक विशिष्टता दी जा सकती है कहने वाले की मुद्राओं का सूक्ष्म विवरण देकर। लेकिन जितना ही ज़्यादा सूक्ष्म विवरण देकर दमित क्षोभ की परिभाषा की जायगी उतनी ही ज़्यादा अर्थ की ऐक्यूरेसी बढ़ती जायगी। और एक विशिष्ट अर्थ ही वहाँ रहेगा बाकी नहीं। इसी को नाटक में सिर्फ एक छोटे संवाद के रूप में लिखा जायगा। अधिक से अधिक कोष्ठकों में नाटकीय संकेत दे दिया जायगा। लेकिन नाटक का शब्दार्थ सिर्फ इतना ही नहीं होगा। हर अभिनेता की अपनी योग्यताएँ और विशिष्टताएँ होती हैं। सिर्फ "मुझे कुछ नहीं कहना" जैसे संवाद में अलग अलग अभिनेता अलग अलग अर्थ विशिष्टताएँ पैदा कर सकते हैं।

जिस नाटक की भाषा में ये अर्थ विशिष्टताएँ पैदा करने की गुंजाइश सबसे ज़्यादा हो वह सबसे अच्छा नाटक हो सकता है। इसे हाशिए वाली भाषा कह सकते हैं जिसमें हर नया आदमी अपने विशिष्ट अर्थ अंकित कर सके।

अक्सर अच्छे नाटक में 'नाटकीय निर्देश' बहुत कम होते हैं। नाटकीय निर्देशों का ज़्यादा इस्तेमाल करने वाला लेखक निश्चय ही ऐसी भाषा में असमर्थ होता है जिसकी नाटकीय विशिष्टताएँ ज़्यादा गहरी और एक से ज़्यादा हों। अक्सर लेखक मंच पर आने जाने के ही नहीं

संवादों के साथ वांछित उतार-चढ़ावों के भी निर्देश देते हैं यहाँ तक कि मंच पर फूलदान से लेकर 'खिड़की का पल्ला आधा खुला' तक के निर्देश दे डालते हैं।

लेखक निर्देशक या अभिनेता भी नहीं होता। प्रकाश व्यवस्था तक निर्देश करने वाला लेखक अपनी रचना की नाटकीय संभावनाओं के प्रति आश्वस्त नहीं होता तभी वह ऐसा करता है।

नाटक की भाषा का एक और महत्वपूर्ण पक्ष है शब्दों के मुखौटे। कहीं शब्दों के मुखौटे जहाँ अनिवार्य होते हैं वहाँ कहीं दूसरी जगह वे घटिया नाटक की पहचान भी होते हैं। समूचे क्लासिकी साहित्य के नाटकों की भाषा मुखौटे वाले शब्दों से बनती है।

मुखौटे मूलतः प्रतिनिधि होते हैं विशिष्ट इकाई नहीं। निष्ठुर व्यक्ति का यथार्थवादी चरित्र नाटक में एक विशिष्ट व्यक्ति होता है लेकिन मुखौटा लगाए हुए दैत्य कोई एक दैत्य होता है। दैत्य वर्ग का प्रतिनिधि। वही स्थिति क्लासिकी भाषा में शब्दों की होती है :

चित्रलेखा : सखी, वे अपनी मनचाही प्यारी से मिलने का सुख लूटते हुए आनन्द के स्थान पर बैठे हैं।

—विक्रमोर्वशीय

बहादुर : प्यारी नूर, मैं सोच रहा था कि आफ़ताब के सामने भी चेहरे पर सोचोफिक्र की बदली पाई जाती है।

—सैदेहविस

यह मुखौटों वाले शब्दों की भाषा है। आधुनिक लेखन ने इसके बजाय शब्दों के नंगे चेहरों का इस्तेमाल शुरू किया। जहां नंगे शब्दों की भाषा की ज़रूरत हो वहाँ मुखौटे वाले शब्दों का प्रयोग नाटक का कितना उपकार करता है इसका एक उदाहरण है राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय द्वारा किए जाने वाले आधुनिक नाटकों के अनुवाद। या फिर जयशंकर प्रसाद के नाटक। आम तौर पर लोगों ने एक बहुत रद्दी और नाटकीय दृष्टि से खतरनाक धारणा बना रखी है कि अगर नाटक मुगलकालीन इतिहास

से संबंधित हो तो उसमें बेपनाह उर्दू होनी चाहिए और अगर वह भारतीय अतीत के हिन्दू कथानकों से संबंधित हो तो निश्चय ही उसे संस्कृत निष्ठ होना चाहिए। यह बचकानी बात है। अगर उद्देश्य सिर्फ युग विशेष की भाषा की निकटता पैदा करना होता तो भले ही संवादों में ऐसी भाषा लिख दी जाती, नाटकीय निर्देशों में भी संस्कृतनिष्ठा बिल्कुल अनावश्यक थी :

[नंद शृंगारकोष्ठ से भी चषक उठा लेता है और दोनों को ले जाकर मदिराकोष्ठ में रख देता है।]

[नंद पीछे के दीपाधार के कुछ एक दीप जला देता है फिर अग्नि-कोष्ठ बुझा कर दीपाधार के नीचे रख देता है।]

—लहरों के राजहंस

संवादों में ही नहीं नाटकीय निर्देशों में भी इस तरह की भाषा का प्रयोग ज़ाहिर करता है कि यह संस्कृतनिष्ठा नाटकीय अनिवार्यता नहीं एक काम्प्लेक्स है।

मुखौटे वाली भाषा 'चुस्त और चुटीले' संवाद लिखने के लालच का परिणाम होती है। यह भाषा नए नाटक के विकास में सबसे बड़ी बाधा होती है।

सही नाटकीय भाषा का एक ठोस उदाहरण देना चाहूँगा, आयोनेस्को का नाटक "लेसन"। इस नाटक में आम धारणा के अनुसार 'नाटकीय' कहा जा सकने वाला एक भी संवाद नहीं है। ऐसा एक भी वाक्य नहीं है जिसे जीवन-दर्शन की उक्ति के रूप में उद्धृत किया जा सके। कई-कई पृष्ठों तक सिर्फ़ इसी बात को दुहराया जाता रहता है कि अमुक संख्या में से अमुक घटने या जोड़ने पर क्या संख्या आएगी। नाटक के अन्त की ओर करीब पन्द्रह-सोलह पृष्ठों में लड़की सिर्फ एक ही वाक्य बार-बार बोलती है—मेरे दाँत का दर्द···। प्रोफेसर समूचे पन्द्रह-सोलह पृष्ठों में अकेले लगातार बोलता जाता है। फिर भी इस नाटक में इतना गहरा नाटकीय तनाव पैदा हो जाता है कि दर्शक की साँस रुक जाती है।

'लेसन' का घटना-स्थल सिर्फ़ एक कमरा है। अन्तर्द्वन्द्व जैसी चीज़ को पूरी तरह नकार कर भी नाटकीयता की कहीं भी क्षति न होने देने वाले इस नाटक के दोनों मुख्य पात्र अधिकांश संवाद बैठे बैठे बोलते हैं। यही नहीं प्रोफेसर द्वारा बोले गए अस्सी फीसदी से ज़्यादा संवाद ऐसे हैं जिनका अर्थ समझा जाना भी आवश्यक नहीं होता। दरअस्ल उन संवादों के कोषगत अर्थों तक पहुंचने की नौबत ही नहीं आती। उदाहरण के लिए ऐसे संवाद लें—

प्रोफेसर : अब एक दूसरा उदाहरण लीजिए। राजधानी शब्द अलग-अलग भाषा बोलने वाले के लिए अलग-अलग अर्थ देता है। इसलिए जब स्पेनवासी कहता है। "मैं राजधानी में रहता हूं" तब राजधानी शब्द से वह जो अर्थ लगाएगा, वह वही नहीं होगा, जो किसी ऐसे पुर्तगाली का होगा जो पुर्तगाली में कहे "मैं राजधानी में रहता हूं" यही बात फ्रांसीसी, नव-स्पेनी, रूमानियन, लातीनी या सार्दीनापालिटन पर भी लागू होती है। इत्यादि।

नाटक की भाषा (या ऊपरी कथ्य) अक्सर इतनी ज़्यादा तकनीकी है कि किसी शोध प्रबंध का खुश्क हिस्सा लगता है। नाटक रोचक नहीं है फिर भी बाँधता है। संवादों में समझा जाने लायक ऊपरी तौर पर जो भी है वह नीरस, गूढ़ और उबाने वाला है। फिर भी नाटक ऊब नहीं संलग्नता पैदा करता है। नाटक में आवेगों का उतार-चढ़ाव उसकी भाषा से बाहर है। नाटकीय भाषा का इससे बड़ा उदाहरण नामुमकिन ही होता है।

पिछले दो-तीन बरसों में नाटक की भाषा पर खोज-बीन का अभिनय होना शुरू हुआ। यह और ज़्यादा खतरनाक बात हुई है। हमारा दुर्भाग्य यह है कि चिन्तन की सीढ़ियों पर हम पश्चिमी देशों की तुलना में कोई एक सदी पीछे चढ़ते हैं। शब्द वस्तुओं के प्रतीक हैं या नहीं, इस पर पिछली सदी में बातचीत शुरू हुई थी। शब्द ध्वनि की लय विशेष है

और "शब्दों का सर्जनात्मक प्रयोग उन सन्दर्भों की लय में और नई-नई लय खोज सकना है।" जैसी बहस हिन्दी नाटककार के लिए नई हो सकती है। उन लोगों के लिए नही जिन्होंने आधुनिक दर्शनशास्त्र को वाग्दर्शन-शास्त्र में ला खड़ा किया है। जिस तरह बच्चों को हम अक्षरारंभ कराते हैं, पश्चिमी देश अक्सर पिछड़े देशों को भी इसी तरह का 'अक्षरारंभ' करा देते हैं।

लेसन जैसे नाटक को देखने के बाद कोई भी यह निर्णय कर सकता है कि नाटकीय भाषा में उद्दिष्ट अर्थ न तो शब्दकोष-निर्भर होता है, न ही ध्वन्यात्मकता और लय-विशिष्टता से प्रभावित होता है। प्रोफेसर की छात्रा द्वारा दस-पन्द्रह पृष्टों तक लगातार दुहराया जाता एक वाक्यांश "मेरे दाँतों में दर्द" अर्थवान है या लय-विशिष्ट है, यह कहना अर्ध-प्राध्यापकीयता के अलावा कुछ नहीं होगा। यह वाक्य पचासों बार एक ही तरह से बोला जाकर भी उबाता तो नहीं ही है, दर्शक की नाट्कीय संलग्नता को आगे भी ले जाता हैं। आयानेस्को ने इस वाक्य को इसकी अर्थवत्ता और लय-निर्भरता से मुक्त किया है। वाक्य अर्थवान और लय निर्भर होकर तभी तक दर्शक को बाँधता है जब तक लय और अर्थ की अन्तिम संभावना भी समाप्त नहीं हो जाती। ये संभावनाएँ अनन्त नहीं, बहुत सीमित होती हैं। एक सीमा के बाद नए अर्थों और नई लय की तलाश सिर्फ चमत्कार भर ही रह जाती है। हाँ जहाँ शब्द अर्थवत्ता और लय निर्भरता से मुक्ति पा जाते हैं वहाँ शब्दों का अब पैदा करने वाला आयाम भी समाप्त हो जाता है। वे शब्द न रुचते हैं न उबाते हैं। आधुनिक नाट्य लेखन का बहुत बड़ा अनुसंधान है ऐसी भाषा जो अर्थवत्ता और लय निर्भरता से मुक्त होती है। ऐसी हालत में ही शब्द सही अर्थों में वह हाशिएदार भाषा तैयार कर पाते हैं जिनसे एक ऐसा नाटकीय ख़ाक़ा तैयार हो जिसे निर्देशक और रंग-कर्मी मिलकर मूर्त रूप दें।

दरअस्ल कभी-कभी नाटककार को लगता है कि उसे कृति में

विवेचन विश्लेषण भी करना है। जीवन दर्शन का एक शोशा कुछ लोगों ने छेड़ दिया था। वह भी हावी हो जाता है। इसलिये भी मुखौटे वाली भाषा आ लिपटती है। अच्छे नाटक में जीवन दर्शन के "सुभाषित" जड़े नहीं जाते। इलाहाबाद के एक एकांकी लेखक का संग्रह अभी पढ़ने में आया। हर तीसरा संवाद "इन सुभाषितों" से भरा हुआ है। ऐसा लगता है कि शायद बहुत से "सुभाषित" लेखक को याद हो गए थे उन्हें पेश करने का बहाना नाटक को बनाया गया। इस नज़र से "तीन अपाहिज" जैसे संग्रह और "अदरक के पंजे" में कोई मौलिक अन्तर नहीं है।

थोड़ी सी शर्मिन्दगी महसूस होती है कि हिन्दी में आमतौर पर ऐब्सर्डिटी को शिल्प माना गया है समझ का एक आयाम नहीं। अगर कहूँ कि "योर्स फेथफुली" एक ऐब्सर्ड नाटक है तो उनसे जुड़ना पड़ेगा। उपाय क्या है ?

हर समाज की एक सामाजिक तर्कपद्धति होती है। यह तर्कपद्धति या यह समझ की प्रक्रिया जन समाज की ऐतिहासिक गतिशीलता और द्वन्द्वात्मकता से कट जाती है तो धीरे-धीरे पथरा जाती है। उसका यथार्थ घिस कर विरूप हो जाता है। अगर वह तर्क पद्धति किसी नए यथार्थ में आरोपित न हो सके तो ऐब्सर्ड हो जाती है। 'आर्य' होने के नाते सिर पर 'बोदी' उगाना या सड़कों का कूड़ा खा कर बीमार होती हुई गाय पर फूल-पानी चढ़ाना ऐसी ही ऐब्सर्डिटी हैं। आयनेस्को का नाटक 'दि लेसन' ले सकते हैं। बुद्धिजीविता जब सामाजिक यथार्थ से कट जाती है तो वह एक निर्मम, अमानवीय यान्त्रिकता में बदल जाती है। कभी कभी समूची संस्कृति, समूची व्यवस्था इसी तरह ऐब्सर्ड हो उठती है जैसे नाजियों का तंत्र।

इस ऐब्सर्डिटी को नाटक में उतारने की एक पुरानी परंपरा रही है—व्यंग्यात्मक आलोचना। व्यंग्यात्मक आलोचना वाले लेखन में सर्जनात्मक गहराई प्रायः अनुपस्थिति रहती है। सर्जनात्मक गहराई की अनुपस्थिति एक जगह ऐसे लेखन की मजबूरी भी होती है। सर्जनात्मक

गहराई रचना को एक ऐसी अनिवार्य गंभीरता दे देती है जिसके रहते व्यंग्य की फुर्तीली पैंतरेबाजी मुमकिन नहीं होती।

इसीलिए समसामयिक रचनाकार ने अभिव्यंजना-शिल्प को एक सर्वथा नया संस्कार दिया—ऐब्सर्ड नाटक में। सिर पर बोदी रखाकर नदी के गंदले पानी में बगैर साबुन के धोई मटमैली धोती पहनकर अपने को किसी से छुए जाने से बचाने वाला आदमी अपने आप में पूरी गंभीरता से जीता है। उसकी यह गंभीरता सतही तौर पर हास्यास्पद लग सकती है लेकिन उसकी ऐतिहासिकता के संदर्भ में उसे एक सही मानववादी दयनीय अधिक मानेगा, अध्ययन और उपचार का विषय मानेगा, हँसी उड़ाने का साधन नहीं।

किसी ऐसे हत्यारे को लीजिए जो दुश्मनी या धन प्राप्ति के लिए नहीं बल्कि आनन्द के लिए हत्या करता है। हत्या करने में मजा आता है। एक सीमा पर ऐसा हत्यारा इस यथार्थ के प्रति अन्धा हो जाता है कि उसका शिकार मर गया। मध्ययुगीन सामन्त को अपने मनोरंजन के लिए मरते हुए आदमी देखने में इस बात का एहसास नहीं होता था कि जिसकी हत्या की जा रही है वह मानव है।

हमारी सामाजिक व्यवस्था में भी अक्सर ऐसी अमानवीयताएँ पैदा होती हैं। उन्हें ऐब्सर्ड नाटकों की विधा में आकलित करने वाले नाटककारों ने सर्जन-शिल्प को निश्चय ही एक नया आयाम दिया है। पश्चिम की नाट्य परंपरा में जो शिल्पगत विस्फोट इन नाटककारों ने पैदा किया वह इससे पहले शायद ही कभी हुआ हो।

लेकिन यह विस्फोट बहुत खतरनाक भी है। दुर्भाग्य से इस शिल्प का आविष्कार पश्चिम के कुछ ऐसे नाटककारों ने किया जिनकी दृष्टि बँधी हुई थी (गोकि वे 'फ्री' थिंकर कहे जाते हैं)। उनका उद्देश्य रहा है इस सशक्त विधा द्वारा एक ऐसी व्यवस्था का विरोध करना जिस व्यवस्था ने दुनिया की बहत्तर फीसदी पिछड़ी हुई जनता के लिए एक

ऐतिहासिक विकल्प पेश किया। इस विधा का मूल प्रयोग मार्क्सवाद-विरोध के लिए किया गया।

मैं अपने को उन लोगों से सहमत नहीं पाता जो इस विशिष्ट विधा का सिर्फ इसलिए बहिष्कार करना चाहते हैं कि यह मार्क्सवाद-विरोध का हथियार बनी। जिस विधा का प्रयोग, आयोनेस्को जैसे नाटककार मार्क्सवाद विरोध के लिए करते हैं उसी सशक्त विधा का प्रयोग स्वयं प्रतिक्रियावादी व्यवस्था से लड़ाई के लिए भी किया जा सकता है। जिस अन्तरिक्ष विज्ञान या परमाणु विज्ञान का प्रयोग पश्चिम के मार्क्सवाद विरोधी देशों ने अपनी मजबूती के लिए किया है क्या उसी का विकास और उपयोग मार्क्सवादी व्यवस्था अपनी विजय के लिए नहीं करती ?

इसमें संदेह नहीं कि इस विधा में दुनिया के बेहतरीन मार्क्सवाद विरोधी नाटक लिखे गए। यह स्वीकार न करना मार्क्सवादी नाटककार की शुतुर्मुर्गीयता ही कही जायगी। इनमें से कुछ नाटक तो सिर्फ मार्क्सवादी व्यवस्था के 'ठहराव' और 'घुटन' की विवेचना के उद्देश्य से लिखे गए जैसे 'चेयर्स' लेकिन कुछ दूसरे नाटककारों ने जन संघर्ष के दर्दनाक इतिहास की उपेक्षा करते हुए मार्क्सवाद का अतिसरली करण करके द्वेषपूर्ण हिंसात्मक नाटक लिखे हैं। जैसे 'स्ट्रिपटीज़' और 'टैंगो' (म्रोज़ेक लिखित) अथवा 'द गार्डेन पार्टी' (हैवेल लिखित)।

शिल्प की ताज़गी 'स्ट्रिपटीज़' जैसी रचना में है इसमें सन्देह नहीं। सही नाटककार इसी शिल्प को सही लड़ाई के लिए इस्तेमाल में ला सकता है। 'स्ट्रिपटीज़' में दो पात्रों को एक सुर्ख हाथ टार्चर करता है। यह नियति सही परिप्रेक्ष्य में सही नाटककार रख सकता है। आज की व्यवस्था का सरकारी अफसर जो साम्राज्यवादी-सामन्ती तंत्र की कतरन के तौर पर बचा है, किसी भी कार्यालय में अपने मातहत कर्मचारी को या अपने हलके की जनता को अक्सर उस 'सुर्ख हाथ' से ज़्यादा निर्ममता से यातनाएँ देता है।

अंग्रेज़ सरकार ने कुछ पोथियाँ बनाई थीं जिनमें सरकारी अधीनस्थ

कर्मचारियों को अनुशासित रखने वाली नियमावलियाँ हैं। १९६८ में मैंने 'फण्डामेण्टल रूल्स' की जो प्रति खरीदी थी उसके मुखपृष्ठ पर छपा था—फण्डामेण्टल रूल्स मेड बाई गवर्नर जनरल इन काउंसिल। अंग्रेज़ ने जो सरकारी तंत्र बनाया था उसमें ऐसी कल कोई नहीं रहने दी थी जो तेजी से घूम सकती हो। उसे यथास्थिति की ज़रूरत थी। इसीलिए अंग्रेज़ के जाने के कोई बाइस बरस बाद भी सरकारी-सेवा नियमन-संहिता पर गवर्नर जनरल विद्यमान रहा। १९७० में इसी विषय पर मेरे लिखे एक लेख के बाद गृहमंत्रालय ने इधर परिवर्तन शुरू किया था ऐसा उस लेख छापने वाली पत्रिका को सरकार से हुई बातचीत से पता चला था। इन संहिताओं के नीचे एक साधारण व्यक्ति किस कदर दयनीय होकर मारा जाता है इसके बहुत से दर्दनाक उदाहरण मुझे पिछले दस बरस से सरकार में काम करते हुए मिले। ऐसी यंत्रणाओं को अभिव्यक्ति देने के लिए ऐब्सर्ड नाटकों की विधा से ज़्यादा सशक्त विधा दूसरी नहीं है।

हिन्दुस्तान में यह संयोग मात्र ही नहीं है कि पिछले दिनों, ब्रेख्त के नाटकों के एकाध अपवाद (फैशन की मजबूरी में) छोड़ कर, आल्बी, आयोनेस्को, बेकेट आदि के न केवल व्यापक प्रदर्शन हुए बल्कि उन्हें भद्रलोक की लोकप्रियता भी मिली। इस लोकप्रियता के पीछे इनकी शिल्पगत नवीनता ही नहीं थी। यथास्थिति के बीच पूंजी के लिए होने वाली मध्यवर्गीय दौड़ को ऐसी रचनाएं रास आती रही हैं। इन नाटकों का प्रदर्शन शहरों के अत्यन्त फैशनेबल इलाकों के संभ्रान्त सभागारों में समाज के संभ्रान्त वर्गीय लोगों द्वारा ही हुए। उनके दर्शकों में बड़े अधिकारियों की पत्नियाँ-बेटियाँ, नए व्यवसायी युवक तथा दूसरे ऐसे लोग रहे हैं जो अंगरेज़ी जीते हैं, संभ्रान्ति बोलते हैं और जिन्हें सारी व्यवस्था से सिर्फ अपने लिए सुविधाओं की अपेक्षाएं रहती हैं।

इस नज़र से एक बार नाटक फिर हज़ार बरस पीछे फेंक दिया गया है। सुरुचि सम्पन्न, रसज्ञ के लिए ही ये नाटक हुए जैसा कभी कालिदास

के युग में होता रहा था। उस समय काव्य रसज्ञ को छोड़ कर (रसज्ञ होने का हक भी राजपुत्र, पुरोहित और श्रेष्ठि के अलावा और किसे था?) जनसाधारण के लिए नहीं था। एक बार फिर नाटक को उसी किस्म के रसज्ञ को सौंपा गया।

लेकिन 'रसज्ञ से बाहर नाटक' की समस्या के साथ एक और सवाल जुड़ा है—सर्जनात्मक समझौते का। लोगों की ऐसी राय है कि आम आदमी के लिए घटिया शिल्प और घटिया सृजनात्मक कथ्य की जरूरत होती है। जनसाधारण अशिक्षित है इसलिए उन्हें अच्छा नाटक नहीं सस्ते हास्य से मिलता-जुलता, अतिनाटकीय भोंड़ा नाटक ही देना होगा। यह गलत है। यह आमतौर पर उन लोगों की नासमझी है जो नए सृजनात्मक परिवर्तनों से स्वयं पीछे छूट जाते हैं। स्कूल की शिक्षा समाज की सांस्कृतिक अभिरुचि से जुड़ी नहीं होती। अगर ऐसा होता तो डी० लिट्० करने वाला व्यक्ति सबसे अच्छा कृतिकार हो जाता। जनसाधारण न तो सांस्कृतिक दृष्टि से पिछड़ा हुआ होता है और न नए सृजन के प्रति अन्धा। अच्छी नई सृजनात्मक उपलब्धि को तभी स्थायित्व मिलता है जब उसे जनसाधारण की व्यापक स्वीकृति मिलती है। और सही सृजनात्मक उपलब्धि को निश्चय ही व्यापक जन समर्थन मिलता है। यहाँ ध्यान रखना होगा कि चमत्कारवादी लेखन के प्रति उसमें वैसी ही क्षणिक उत्सुकता होती है जैसी सड़क के किनारे बेहोश लड़के को हवा में उड़ाते बाजीगर के प्रति होती है।

ऊपर मार्क्सवाद विरोध और ऐब्सर्ड नाटक-आन्दोलन के रिश्ते का जिक्र किया था। लेकिन यही शिल्प-विधान किस तरह सही दृष्टि की तलाश बन सकता है इसका उदाहरण है नाटककार आर्थर अदामाव। अदामाव ने लगभग बेकेट के समानान्तर, लेकिन भीतरी तौर पर अधिक सार्थकतापरक नाटकों से शुरूआत करके सामाजिक यथार्थवादी कथ्य का पैनापन देने के लिए उसी शिल्प का इस्तेमाल किया।

इसी बात का एक दूसरा पक्ष भी है। पिछले कुछ बरसों में साहित्य

में और नाटकों के सन्दर्भ में सम्प्रेषणीयता के संकट का बार बार जिक्र हुआ है। इसे कभी कभी भाषा का संकट भी कहा गया है। भाषा का संकट छद्म बुद्धिजीविता का सबसे साफ उदाहरण है। दरअस्ल भाषा की जिम्मेदारी से पलायन का छद्म है यह संकट। जिस समय सही बात कहने की जिम्मेदारी बुद्धिजीवी पर आ जाय और वह बुद्धिजीवी सही बात कहने से जुड़े हुए खतरे उठाने को तैयार न हो उस वक्त यह संकट उसे दिखाई देता है कि भाषा अपर्याप्त है और वह अभिव्यक्ति का साथ नहीं दे पा रही।

पिछले कुछ दशकों में जैसे जैसे दुनिया के दो तिहाई पिछड़े हुए हिस्से में वामपंथी आन्दोलन बढ़ा और विरोध की जिम्मेदारियाँ व्यापक हुईं, ऐसे बुद्धिजीवी के सामने निर्णायक मोड़ उपस्थित हो गया जो यथास्थिति में घुसा हुआ धीरे धीरे घिसटकर संभ्रांति की ओर पहुँच रहा था। जिसे यह लग रहा था कि उम्दा चीज़ों से भरपूर सुविधाओं की ज़िन्दगी का किनारा उसके हाथ किसी भी क्षण आ जायगा उसके सामने यकायक यह सवाल आ खड़ा हुआ कि वह किसके साथ है, किस ओर है, इस बात को स्पष्ट करे। 'सगीना महतो' जैसे लेखक ने तुरन्त फैसला लेकर जनसमूह के उस ओर थोड़े से लोगों की दुनिया की ओर अपने को कुदा लिया। लेकिन कुछ ओर ज़्यादा चालाक लेखकों ने विशेष रूप से पश्चिम के लेखकों ने भाषा संकट चेहरे पर लटका कर अपने को बचाया।

'भाषा का संकट' एक साहित्यिक चालाकी है। पश्चिम में शब्द केंद्रित नाटकों के विरुद्ध निर्देशक अथवा अभिनेता के नाटकों का व्यापक आंदोलन उठा। इस आन्दोलन के एक बाजू जहाँ 'भाषा-संकट' से पीड़ित बुद्धिजीवी रहे हैं वहाँ दूसरे बाजू वे अभिनेता और निर्देशक जो रंगमंच को सामाजिक संघर्ष की भाषा के प्रभाव से बचाना चाहते हैं। यह सिर्फ एक मिथ है कि शब्द केन्द्रित नाटक के अतिरिक्त सचमुच कोई नाटक संभव है। भले ही आलेख सुनिश्चित या पूर्वलिखित न हो, घटनाओं, स्थितियों या भंगिमाओं का जो सिलसिला मंच पर पेश किया जाता है उसका अना-

यास आलेख या प्रारूप निर्देशक या अभिनेता के पास होता ही है। फिर भी हम यह मान लेते हैं कि शब्देतर नाटक होता है। ऐसे शब्देतर नाटक की नीयत निश्चयतः अगर राजनीतिक नहीं होती तो कम से कम आधुनिकता की सभी शर्तों के विरुद्ध, ऐसा नाटक सामन्तयुगीन मनोरंजन-धर्म से ऊपर नहीं उठता।

हिन्दी में कुछ अरसा पहले (यह संयोग नहीं हैं कि) पश्चिमी जर्मनी से सम्बद्ध मैक्समूलर भवन ने हिन्दी में ऐसे प्रयोग को प्रेरणा और पोषण दिया जो बुद्धिजीवी के गूंगेपन की इसी तथाकथित छटपटाहट का नमूना था। प्रयोग का उद्देश्य रहा है भाषा की असमर्थताओं के बीच नाटकीय स्थितियों का अनुसंधान। ये असमर्थताएं ही वह चालाकी है जिसकी आड़ में बुद्धिजीवी सामाजिक जिम्मेदारी से भाग निकलता है। सैम्युएल बेकेट के "ऐक्ट विदाउट वर्ड्स" और तार्जू के "ए वायस विदाउट एनीवन" का भाषा संकट हो या फिर मैक्समूलर भवन के मैड डिलाइट का संकट, दोनों ही किसी ऐसी स्थिति के परिणाम नहीं हैं जहाँ कोई बड़ा सामाजिक-मानवीय सत्य कह न पाने के दर्द का एहसास हो। वे ऐसी स्थिति के परिणाम हैं जिसमें छुपे तौर पर विश्वासघात करने वाला बुद्धिजीवी खामोशी, बेजुबानी, गूंगेपन, मानसिक विक्षिप्तता और बेबसी का अभिनय करता है।

आयोनेस्को ने साफ लिख दिया था कि समस्याओं का सबसे बड़ा हल यह समझ लेना है कि अब कोई समस्या हल करने लायक नहीं बची। शोषण की व्यवस्था की ओर से इतना साफ वक्तव्य शायद ही कभी दिया जा सके। और चूंकि बुद्धिजीवी यह साबित ही करना चाहता है कि जन-संघर्ष बेकार है और जन चेतना के सामने जो समस्याएं हैं वे दरअस्ल हल हो चुकी हैं और समस्याएं होने का एहसास एक धोका है, इसीलिए वह नाटक में भाषा के संकट की घोषणा कर देता है।

पिछले दिनों नाट्य जगत में एक बार फिर श्लीलता, अश्लीलता का चक्कर चला। अश्लीलता जैसी चीज होती है इसमें सन्देह नहीं। जिस

तरह घटिया नाटक या घटिया साहित्य होता है उसी तरह अश्लीलता भी होती है। आदमी और औरत के यौन-संबंधों का इस्तेमाल किसी यथार्थ के नाटकीय उद्घाटन के लिए भी हो सकता है और बिक्री के लिए भी। चूंकि यौन संबंधों को सबसे ज्यादा आसानी से बिक्री का साधन बनाया जा सकता है इसलिए लोगों ने इसका इस्तेमाल किया भी है। अश्लील इस्तेमाल ही हुआ है इसमें भी शक नहीं। जितनी अश्लील रचना हो सके उतनी ही वह सस्ती और घटिया होती है इसलिए भी कि उसकी ज्यादा खपत हो जाती है।

'योर्स फेथफुली' में यौन संबंधों की कुछ खुली बातें हैं। मैं अपने मार्क्सवादी सहयोगियों की आपत्ति स्वीकार करने को तैयार हूँ। गैर मार्क्सवादी है यह मुहावरा फिर भी इसका इस्तेमाल मैंने किया है। लेकिन अन्दर से देखने पर स्पष्ट हो सकेगा कि इस नाटक में सेक्स स्वयं एक वक्तव्य है। वह पराजित मन का ऐसा अवशिष्ट जीवन-तन्तु है जिसने पात्रों की समझ को बीमार कर दिया है। जिन पात्रों ने सभी हथियार डाल दिए हैं या जिन्हें विवश निहत्था कर दिया गया है वे अगर जननेन्द्रिय में ही अपनी जिजीविषा खोजें तो आश्चर्य क्या है? 'योर्स फेथफुली' में ये प्रसंग इसीलिए मैं गलत नहीं मानता।

मेरे लिए शिल्प फैशन नहीं आवश्यकता है। स्टेनो कंचन रूपा ने आत्महत्या कर ली है। उसकी मृत्यु पर सरकारी दफ्तर में शोकसभा आयोजित की गई है। शोकसभा में स्वयं कंचन रूपा को हिस्सा लेते देख कर दफ्तर में एक टेक्नीकल सवाल उठ खड़ा होता है। इस समस्या पर होने वाली सारी बहस उपमानवीय है। कंचन रूपा के अपनी ही शोक सभा में शामिल होने की याचना के पीछे जो यंत्रणा है उससे बिल्कुल असम्पृक्त कार्यालय का परिवेश सिर्फ संहिता के अमानवीय सूत्रों में उलझता रह जाता है। दफ्तरों की फाइलों में दब कर समाप्त हो चुके व्यक्तित्वों वाले किसी भी व्यक्ति को देखकर कौन कह सकता है कि वह निरन्तर अपनी शोकसभा की तलाश ही नहीं कर रहा है? जिन्हें यह शिल्पगत

चमत्कार लगता है। उन्होंने नाटक के अभिप्रेत यथार्थ को शायद देखा ही नहीं अन्यथा उन्हें यह चमत्कार नहीं, विश्वसनीय सत्य लगता।

कठिनाई यही है कि नाटक जिस समाज से जुड़ा हुआ है उसकी यन्त्रणा से सीधा परिचय फैशनेब्ल बुद्धिजीवी को नहीं है। उसका अनुभव दूर का साक्षात् या फिर मात्र श्रुति है। मुझे यह देखकर खुशी हुई कि सरकार के तृतीय और चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों ने इस नाटक के प्रदर्शन में उन सभी पहलुओं का सहज साक्षात् किया जिनसे उनकी नियति नियमित होती है और जो इस नाटक का मुहावरा हैं।

मुझे मार्टिन एस्लिन की यह बात ज़रूर सही लगती है (एस्लिन की राजनीतिक प्रतीक्रिया के बावजूद) कि एब्सर्ड नाटक यथार्थ की नए सिरे से तलाश के लिए आविष्कृत अभिव्ययंजना-पद्धति है। यह उस यथार्थ को उद्घाटित करती है जो जड़भाषा में दफ़न हो चुका था। समूची नई कविता और नई कहानी की जिज्ञासा यही रही है लेकिन नए नाटक (एब्सर्ड) ने इस दिशा में सबसे अधिक सफलता पाई है इसमें सन्देह नहीं।

आर्थर अदामाव की तुलना में इसी विधा के माध्यम से सत्य की ज़्यादा गहरी और व्यापक उपलब्धि ब्रेख़्त ने की। कहा जा सकता है कि ऐब्सर्ड नाटकों के आन्दोलन में व्यंजना ने जो स्वाधीनता सिर्फ भाषा के माध्यम से बेकेट या आयोनेस्को में पाई वही स्वाधीनता ब्रेख़्त के नाटकों में समग्र रंग प्रक्रिया ने पाई। इसीलिए ब्रेख़्त इन सबसे आगे (और सही दिशा में) पहुँच सका।

चूंकि ब्रेख़्त का ज़िक्र आ गया है इसलिए इस विषय पर कुछ आकाशभाषित मैं गैरज़रूरी नहीं मानता। हिन्दी में एकाध बार ब्रेख़्त के बारे में रूमानियत से भरी हुई कुछ टिप्पणियाँ जरूर लिखी गई हैं लेकिन विस्तार से कुछ नहीं लिखा गया। जाने क्यों ? ब्रेख़्त लोकप्रिय भी है और आदरणीय भी, फिर भी उसके बारे में सोच विचार ठहरा हुआ है।

मार्टिन एस्लिन् की एक रोचक बात कहीं पढ़ी थी ब्रेख़्त के बारे में। उसने लिखा था कि ब्रेख़्त अगर कहीं वह हो जाता जो वह मन से बनना चाहता है तो शायद बहुत छिछला नाटककार होता। वह इसलिए महान है कि जो वह होना चाहता था उससे उल्टा होता रहा। मुझे लगता है यह बात मूल्यांकन कम, चालाकी ज़्यादा है। ब्रेख़्त सचमुच लेखन् के स्तर पर वही हुआ जो वह होना चाहता था। एस्लिन् ने कहा कि वह लोकगम्य होना चाहता था लेकिन भद्रलोक (एलीट) का बन गया। यह बात गलत है। एक हद पर कोई भी युगीन महत्व का कृतिकार भद्रलोक का प्रिय भी बन जाता है। माओ तक भद्रलोक का फैशन बन गया फिर ब्रेख़्त की क्या हस्ती है। एस्लिन् कहता है कि वह क्रान्ति का मसीहा बनना चाहता था लेकिन क्रान्ति के अलम्बरदारों ने उसे अस्वीकार कर दिया। किसी शासनतंत्र विशेष द्वारा अस्वीकार किए जाने भर से ही यह नतीजा निकालना अख़बारी विवेचना है, सैद्धान्तिक समझ नहीं।

हाँ ब्रेख़्त में एक भयानक विरोधाभास है। लेकिन उस विरोधाभास के बारे में बात करने से पहले यह स्वीकार करूँगा कि अधकचरे लेखक और मंचकर्मी का जितना नुकसान ब्रेख़्त ने किया है उतना और किसी ने नहीं। ब्रेख़्त के लेखन या तैयार किए प्रस्तुतीकरण ने नहीं, ब्रेख़्त की आदतों ने। जैसे किशोर मन फिल्म के हीरो की तरह बालों की धजा बना लेता है वैसे ही समझ से किशोर व्यक्ति का भठ्ठा बैठाया है ब्रेख़्त ने। खैर।

ब्रेख़्त अभिनेता और दर्शक के बीच नए रिश्ते की तलाश करता है। उसी के शब्दों में "वैज्ञानिक युग" का रिश्ता। इसके लिए वह अभिनेता को ऐसा अभिनय मना करता है जिसमें वह दर्शक को अभिनेय चरित्र में डुबा दे। वह दर्शक के आत्मनिष्ठ (सब्जेक्टिव) समर्पण को नापसन्द करता है। वह नहीं चाहता कि अंधे हो गए ईडिपस की यातना दर्शक भोंगने लगे। ब्रेख़्त चाहता है कि अभिनेता दर्शक को जगाए या उसके

विवेक को कुरेदे। दर्शक वस्तुनिष्ठ (आब्जेक्टिव) हो जाय यही उसका लक्ष्य है। वरना वह मानवीय संबंधों के अन्तरंग को समझ नहीं पाएगा। इसीलिए ब्रेख़्त चाहता है कि "अभिनेता मानवीय संबंधों और सीमाओं के साथ मानव-व्यवहार समझे।"

यहाँ ऐसा लगता है जैसे ब्रेख़्त स्टैनिस्लाव्स्की के संतपंगवाद (कम्यूनियन) का विरोध करना चाहता है। लेकिन स्टैनिस्लाव्स्की जिस अन्तरंग सत्संग का जिक्र करता है उसकी पहली शर्त है पारस्परिक सम्बन्धों की पहचान इस स्थिति से बाहर नहीं हैं व्यक्ति की अपनी सीमाएँ-अक्षमताएँ और अपने प्रासंगिक व्यवहार की समझ। जहाँ पारस्परिक अन्तरंग संबंध पहचाने जाते हैं वहाँ बाकी दो शर्तें भी निभती हैं। और जहाँ मंच अभिनेताओं द्वारा संबंधित चरित्रों का आन्तरिक सत्संग उपलब्ध हो जाता है वहाँ दर्शक भी उस सत्संग के अनिवार्य हिस्सेदार हो जाते हैं। इस तरह दर्शक ब्रेख़्त की धारणा के विपरीत, "बह" कर ही मानवीय सम्बन्धों, सीमाओं और व्यवहार को पहचानते हैं।

ब्रेख़्त, इसी तरह अपने प्रदर्शन को अनुष्ठान मानता है। ब्रेख़्त का मंचकर्म उसी हद तक अनुष्ठान या कर्मकाण्ड है जिस हद तक वह अपने प्रदर्शन में "अध्यापनकर्म" निभाता है। कोई भी चौखटे वाला नाटक अनुष्ठान नहीं होता। कोई भी अनुष्ठान रंग-घटना और रंग-दर्शक का भेद नहीं करता। जहाँ कहीं भी रंग-दर्शक रंग घटना से अलग उसका प्रेक्षक होता है वहां अनुष्ठानपरक मंच संभव नहीं होता। ब्रेख़्त यह मान लेता है कि वह दर्शक को हँसाता-रूलाता ही नहीं है बल्कि समझाता भी है। पर यह दायित्व तो तमाम योरोपीय धार्मिक मंचकार निभाते रहे हैं।

दरअसल रंग-चिंतन के क्षेत्र में किसी भी महान सर्जनात्मक प्रतिभा की तरह ब्रेख़्त भी बहुत कमज़ोर है। आधुनिक रंग चिन्तन के लिए इसी वजह से ब्रेख़्त सर्जनात्मक चुनौती है, बौद्धिक चुनौती नहीं।

रूसी उत्तर-क्रान्ति रंगकर्मी नाटक को हथियार मानते रहे लेकिन

वह हथियार से अधिक यथार्थवादी नाटकों से अपना दामन नहीं छुड़ा सका लेकिन ब्रेख़्त ने नाटक को "अदालत" बना कर वह कर दिखाया जो "हथियार" के रूप में नाटक नहीं कर सका था। लेकिन यह घटना सैद्धान्तिक परिभाषा नहीं बन सकी। ईडिपस जैसे नाटक को भी जहाँ ब्रेख़्त अदालत बना सकता था वहाँ "माँ" या "खरिया का घेरा" जैसा नाटक भी अन्य मंचकर्मी के हाथों शुद्ध यथार्थवादी नाटक बनकर रह सकता है। ग्रोताव्स्की की रंगदृष्टि इस नजर से अधिक सिद्धान्तग्राह्य है।

१५ अगस्त १९७४

मुद्राराक्षस

पहला प्रदर्शन सन् १९७२ में लिटिल थियेटर ग्रुप के लिये
ब्रजमोहन शाह द्वारा नई दिल्ली में !

योर्स फेथफुली

पात्र :

अफसर
स्टेनोग्राफ़र : लड़की
पहला क्लर्क : एक हाथ कटा हुआ।
दूसरा क्लर्क
तीसरा क्लर्क
डिस्पैचर
चपरासी
पुलिस का सिपाही

[स्थान—सरकारी कार्यालय का कक्ष जिसमें अफसर के बैठने की जगह अलग है।

परदा उठने से पहले नारे सुनाई देते है : इन्कलाब
जिन्दाबाद
हर जोर जुल्म की
टक्कर में···
हड़ताल हमारा
नारा है !
इत्यादि

उजाला होने पर तीनों क्लर्क, स्टेनोग्राफर लड़की, डिस्पैचर, चपरासी अपनी अपनी सीटों पर बैठे दीखते हैं। सभी के चेहरे मुखौटों जैसे दीखते हैं। खुद मुखौटे भी इस नज़र से इस्तेमाल किए जा सकते हैं।

नारे फिर सुनाई देते हैं]

दूसरा क्लर्क : ये लोग साले नारे इतनी ज़ोर से लगाते हैं कि—

[सभी उसकी ओर देखते हैं। वह आगे नहीं बोलता]

डिस्पैचर : कि क्या ?

दूसरा क्लर्क : साला डर लगने लगता है।

डिस्पैचर : तो तुम ध्यान ही क्यों देते हो ? एफीशिएन्सी बार है··· रुक गए तो अटके रह जाओगे।

पहला क्लर्क : ध्यान न देने से क्या खुल जायगा ? कौन कहता है खुल जायगा ?

डिस्पैचर : कौन कहता है···सभी कहते हैं। सारी दुनिया कहती है···

[अफसर अन्दर आता है]

डिस्पैचर : गुड मार्निंग सर

पहला क्लर्क : गुड मार्निंग सर

दूसरा क्लर्क : गुड मार्निंग सर

तीसरा क्लर्क : गुड मार्निंग सर

स्टेनोग्राफर : गुड मार्निंग सर

चपरासी : ओक् (जैसे मितली आ गई हो)

[अफसर थोड़ा खीज कर अपने चेम्बर में जा बैठता है। ठीक इसी वक्त बाहर फिर नारे सुनाई देते हैं]

डिस्पैचर : लाल निशान लगा दिया। हद ही है।

[कोई कुछ नहीं बोलता]

डिस्पैचर : क्या होगा अरे आधे दिन की अर्ज़ी ले लो। दस मिनट देर हुई थी।

[कोई कुछ नहीं बोलता]

डिस्पैचर : (दूसरे क्लर्क से) क्यों तुमने तो देखा था···घड़ी में नौ पैंतालीस हुए थे जब मैं आया था कल। देखा था न ? दस मिनट की ग्रेस तो होम मिनिस्ट्री भी देती हैं। नौ

पैंतालीस पर हाजिरी रजिस्टर उठा लिया···लाल निशान मार दिया···

[नारे फिर सुनाई देते हैं। डिस्पैचर चुप होता है। नारों की आवाज़ काफी ऊँची हो जाती है । नारों के साथ साथ लाउड स्पीकर पर किसी की आवाज़ नेपथ्य से सुनाई देती है। आवाज़···दोस्तों···साथियों···एक मिनट··· शान्त···शान्त ।···आप लोग ज़रा खामोश रहिए···दोस्तों···साथियों···कल···यानी कल से हमारी शानदार हड़ताल शुरू हो रही है। तो दोस्तों···मैं कह रहा था···साथियों···आज ···आज यहां···मैं देखिए आप लोग···शायद पुलिस आ रही है देखिए यह कुर्बानी देने का वक्त···आप साथियों···मैं पुलिस को आगाह करता···हूँ अरे···अरे···ये जुल्म है···ये तानाशाही है···आप हमें गिरफ्तार कैसे कर रहे हैं··· कोई वारंट···साथियों इन्कलाब···

नारे फिर शुरू होते हैं। धीरे-धीरे वातावरण शान्त ।

अफसर अपनी कुर्सी से उठता है। बीच आफिस में आ खड़ा होता है। एक कागज़ खोलकर पढ़ता है और हर वाक्य अपनी-अपनी सीटों पर खड़े सभी व्यक्ति दुहराते हैं।]

अफसर : सभी कर्मचारियों को आगाह किया जाता है·····।
सभी : सभी कर्मचारियों को आगाह किया जाता है·····।
अफसर : कि आगामी हड़ताल में·····।
सभी : कि आगामी हड़ताल में·····।

अफसर : शामिल होने या किसी दूसरे को
सभी : शामिल होने या किसी दूसरे को
अफसर : शामिल होने के लिए भड़काने
सभी : शामिल होने के लिए भड़काने
अफसर : उस दिन बिना आज्ञा अनुपस्थित रहने
सभी : उस दिन बिना आज्ञा अनुपस्थित रहने
अफसर : या हड़ताल के लिए किसी प्रकार की मदद देने
सभी : या हड़ताल के लिए किसी प्रकार की मदद देने
अफसर : नारेबाज़ी, सभाओं और जुलूसों आदि में
सभी : नारेबाज़ी, सभाओं और जुलूसों आदि में
अफसर : हिस्सा लेने पर सख्त अनुशासनात्मक कार्यवाही की जायगी।
सभी : हिस्सा लेने पर सख्त अनुशासनात्मक कार्यवाही की जायगी।
अफसर : (दूसरा कागज निकालकर) इस प्रतिज्ञा को दुहराइए··· मैं···
सभी : मैं
अफसर : इस कार्यालय का आज्ञाकारी कर्मचारी
सभी : इस कार्यालय का आज्ञाकारी कर्मचारी
अफसर : यह प्रतिज्ञा करता हूँ
सभी : यह प्रतिज्ञा करता हूँ
अफसर : कि न तो आगामी हड़ताल में शामिल हूँगा
सभी : कि न तो आगामी हड़ताल में शामिल हूँगा
अफसर : न उसमें शामिल होने के लिए
सभी : न उसमें शामिल होने के लिए
अफसर : किसी को भड़काऊँगा
सभी : किसी को भड़काऊँगा

अफसर : और न ही उस दिन बिना आज्ञा गैर हाज़िर रहूँगा ।

सभी : और न ही उस दिन बिना आज्ञा गैर हाज़िर रहूँगा ।

चपरासी : ओक् **(जैसे मितली उठी हो । अफसर उसे घूरता है सभी अपनी अपनी सीटों पर लौटते हैं । दूसरा क्लर्क अखबार से विज्ञापन पढ़ता है)**

दूसरा क्लर्क : ज़रूरत है एक मेहनती सेल्समैन की जो लोगों के घरों पर जाकर नई डिजाइन के सेफ्टीरेजर बेच सके । वेतन योग्यतानुसार । ज़रूरत है पाँच सौ बैरल लूब्रिकेटिंग आयल की । ज़रूरत है सात ऐसी लड़कियों की जो टेलीफोन सुन सकें । ज़रूरत है एक ऐसे कुशल और अनुभवी मेकेनिक की जो डीजल पम्प की मरम्मत कर सकता हो । पाँच साल का व्यावहारिक अनुभव जरूरी । आवश्यकता है ऐसे चौकीदार की जो अविवाहित हो । वेतन अच्छा । रहने और खाने की सुविधा । ज़रूरत है एक छापाखाने के लिए एजेन्ट की । वेतन के साथ कमीशन भी । ग्रेजुएट और फ़ारसी जानने वाले को प्राथमिकता दी जायेगी···ज़रूरत है·····

[वह लगातार विज्ञापन पढ़ता रहता है। तीसरा क्लर्क इस बीच अपनी घड़ी देखता है और उठकर दीवार पर बनी हुई नकली घड़ी की सुई साढ़े दस पर कर देता है ।
सभी नकली घड़ी का वक्त देखकर उठते हैं और स्टेज के सामने की ओर कतार बाँध कर खड़े हो जाते है । अफसर उन्हें देखकर सक्रिय होता है और उठ कर आ खडा होता है ।]

अफसर : देवियों और सज्जनों ! आज मुझे खुशी है कि आपने मुझे

इस जलसे में शरीक होने का मौका दिया । यह मेरा सौभाग्य है ··

डिस्पैचर : साहब मातमपुर्सी···

दूसरा क्लर्क : **(अखबार खोल कर शोक समाचार पढ़ता है ।)** श्रीमान घइयोमल बूटा राम के दादा श्रीमान मुसद्दीलाल जी गंगानगर वाले का कल रात हृदयगति रुक जाने से देहान्त हो गया । उनकी पुण्यात्मा परम शान्ति के साथ परम धाम को प्राप्त हुई···

डिस्पैचर : आफिस आर्डर नम्बर सच एण्ड सच , डेटेड सच एण्ड सच···

कोरस : आफिस आर्डर नम्बर सच एण्ड सच । डैटेड सच एण्ड सच । सब्जेक्ट मीटिंग टु कण्डोल दि डेथ आफ़ आफिस स्टैनो मिस कंचन रूपा···

डिस्पैचर : कार्यालय के सभी कर्मचारियों को सूचित किया जाता है कि वे ठीक साढ़े दस बजे कार्यालय के बरामदे में एकत्र हों ताकि कुमारी कंचन रूपा की असामयिक मृत्यु पर सब लोग उनकी आत्मा के लिए शान्ति की कामना कर सकें ।

[खामोश हो जाता है ।]

अफसर : हूँ ! अच्छा तो हमें बहुत दुःख है कि हमारे आफिस का एक जिम्मेदार आदमी आज हमारे बीच नहीं रहा ।

दूसरा क्लर्क : सर मौत स्टेनो की हुई है और स्टेनो लड़की थी ।

अफसर : हाँ, स्टेनो लड़की थी । तो उसकी मौत से हमको गहरा सदमा पहुँचा है । वह इतना मेहनती और वफादार आदमी था···

दूसरा क्लर्क : सर, स्टेनो लड़की थी ।

अफसर : हाँ स्टेनो लड़की थी । **(जैसे सब भूल जाता है)** हाँ,

स्टेनो लड़की थी। तो स्टेनो लड़की थी। स्टेनो लड़की थी···तो··· (भूल जाता है।)

डिस्पैचर : आफिस आर्डर नम्बर सच एण्ड सच। डेटेड सच एण्ड सच, सब्जेक्ट···

कोरस : आफिस आर्डर नम्बर सच एण्ड सच। डेटेड सच एण्ड सच। सब्जेक्ट···

अफसर : हाँ, तो हमें दुःख है कि वह पक्का मेहनती और सच्चा कर्मचारी चला गया···

दूसरा क्लर्क : सर स्टेनो लड़की थी।

अफसर : हाँ, स्टेनो लड़की थी। तो हम उसकी आत्मा के लिए भगवान से शान्ति की कामना करते हैं और अब दो मिनट का मौन रखेंगे।

[सब लोग खामोशी से खड़े होते हैं।]

दूसरा क्लर्क : प्वाइंट आफ आर्डर सर।

अफसर : वी काण्ट एडमिट।

दूसरा क्लर्क : मुझे हिन्दी में कहने दीजिए···एक व्यवस्था का प्रश्न है श्रीमान।

अफसर : इजाजत है।

दूसरा क्लर्क : कुमारी कंचन रूपा हमारी इस शोक सभा में शामिल नहीं हो सकतीं।

कु० कंचन रूपा : लेकिन मैं भी तो इसी दफ्तर में हूँ।

दूसरा क्लर्क : लेकिन ये मर चुकी हैं।

(दूसरा क्लर्क 'ओविच्युअरी' अखबार खोलकर जोर-जोर से पढ़ता है श्रीमान घड्योमल··· इत्यादि।)

कु० कंचन रूपा : लेकिन इसमें मेरा क्या कसूर है? (रोने लगती है।)

दूसरा क्लर्क : कसूर का क्या सवाल। यू आर डेड। तुम अपनी ही शोक सभा में हिस्सा कैसे ले सकती हो?

अफसर : (झल्लाकर) स्टाप इट! तुमसे किसने कहा कि बीच में बोलो?

[खामोशी]

[स्टेनो और अफसर एक-दूसरे की ओर देखते हैं। अफसर थोड़ा नरम हो जाता है।]

स्टेनो : सर, आप थोड़ा-सा ख्याल कीजिए न? मुझे···मेरा मतलब है मैं··· (रो पड़ती है।)

अफसर : (विचलित) ओह! रूल्स···रूल्स क्या कहते हैं? (डिस्पैचर से) तुम्हारे पास कोड आफ काण्डक्ट की कापी होगी?

डिस्पैचर : लेकिन सर, कोड आफ काण्डक्ट से वह मामला अलग है।

अफसर : क्यों, अलग क्यों है? मुझे याद है, बाइस बरस हो गए हैं मुझे इस नौकरी में···कोड आफ काण्डक्ट में सभाओं में कर्मचारियों के हिस्सा लेने के बारे में कुछ लिखा गया है। व्हाट डू यू नो, तुम क्या जानते हो?

डिस्पैचर : मगर···

अफसर : तुम फण्डामेंटल रूल्स भी देखो।

डिस्पैचर : मगर सर फण्डामेंटल रूल्स···

अफसर : हाँ, फण्डामेंटल रूल्स। कापी निकालो।

डिस्पैचर : फण्डामेंटल रूल्स मेड बाई गवर्नर जनरल इन काउंसिल···

कोरस : फण्डामेंटल रूल्स मेड बाई गवर्नर जनरल इन काउंसिल···फाण्डामेंटल रूल्स मेड बाई गवर्नर जनरल इन काउंसिल···

[स्टेनो रोती है।]

अफसर : (लड़की को देखकर) फाण्डामेंटल रूल्स मेड बाई··· मेड बाई···कोई भी बनाए, आदमी के लिए बनते हैं

नियम। कोई नियम जरूर होगा···जरूर होगा। (स्टेनो से) नियम इम्पर्सनल जरूर होते हैं, इनह्यूमन नहीं होते। तुम अपनी नोटबुक लेकर मेरे कमरे में आओ। (लोगों से) और हां, कण्डोलेन्स दोपहर साढ़े बारह बजे होगी।

[अफसर कमरे की ओर जाता है। लोग अपनी-अपनी मेज़ों की ओर लौटते हैं। अफसर मेज पर लौट कर रूल्स की किताब निकाल लेता है। स्टेनो को नोटबुक लेकर अफसर के कमरे तक जाते बाकी लोग देखते हैं।]

अफसर : (स्टेनो से) बैठो। लिखो···आफिस आर्डर नम्बर सच एण्ड सच, डेटेड सच एण्ड सच ? सब्जेक्ट···स्वर्गीया कंचन रूपा अपनी ही शोक सभा में भाग ले सकती हैं या नहीं इसका निर्णय···

[स्टेनो लिखते-लिखते रो पड़ती है। अफसर चुप होकर देखता है। फिर आस-पास निगाह दौड़ा कर स्टेनो के पास आता है। काफी संकोच के बाद धीरे से वह उसकी पीठ छूता है और फिर बेहद उदास हो जाता है।]

अफसर : तुम मर चुकी हो, मिस रूपा ? सचमुच ? सचमुच मर चुकी हो ? एक बात बताओ···क्या मरी हुई लड़की प्रतिवाद करती है ? मिस रूपा···

स्टेनो : जी···?

अफसर : क्या तुम्हारे ख्याल से मरी हुई लड़की···मेरा मतलब है, अगर उसके साथ···यानी कोई आदमी अगर मरी हुई लड़की के साथ कुछ करे···

स्टेनो : मैं समझी नहीं ?

अफसर : ओह ! मान लीजिए कोई आदमी किसी लड़की को पाना चाहता है, उसे चाहता है। उसके साथ सोना चाहता है। लड़की मर जाती है। मर जाने के बाद अगर वह उससे बात करे या उसे छू ले···या यों कहिए, उसके साथ सो जाय ··

स्टेनो : (सिहर कर) मरी हुई लड़की के साथ ?

अफसर : क्यों ? क्या तब भी वह विरोध करेगी ?

स्टेनो : मैं क्या कह सकती हूँ ?

अफसर : ओह ! अच्छा यों समझ लो, एक अफसर है जिसको एक स्टेनो मिली है। अफसर बरसों उस लड़की को··· मेरा मतलब है—वह रोज़ देखता है, मिलता भी है··· एकाध बार लड़की को कहीं काफी पिलाने भी ले जाता है।···

स्टेनो : काफी नहीं आइसक्रीम सर। मुझे काफी से मितली होने लगती थी।···

अफसर : हाँ ! आइसक्रीम। और अफसर···

स्टेनो : और एकाध बार नहीं, पाँच बार सर। आपको याद होगा सर, सबसे पीछे कोने की दूसरी मेज···

अफसर : हाँ, पाँच बार !

स्टेनो : पता नहीं बेयरा किसी मेज़ का बार-बार चक्कर क्यों लगाने लगता है और रेस्तरां में बैठे लोग दूसरों की ओर क्यों देखते हैं ?

अफसर : मैं क्या कह रहा था मिस रूपा ?

स्टेनो : काफी पिलाने ले गए थे···

अफसर : खैर···और हर रोज़ सिर्फ एक बार उँगली या हथेली से छू लेने के बाद वह ठिठक रहता है···मान लो, वह लड़की अचानक मर जाय···जैसे हार्ट फेल हो जाय···

स्टेनो : हार्ट फेल ? नहीं, इतना आसान नहीं होता। इतनी आसानी से मर जाना नहीं होता···मिट्टी का तेल अपने ऊपर छिड़क कर आग लगाई थी मैंने ! मैं सोचती थी जैसे रूमाल जल जाता है, उस तरह से होगा कुछ··· ओफ्···वो यातना···वो यातना···

(सिर हथेली पर टिका लेती है।)

अफसर : खैर, वो दूसरा विषय है। मैं कह रहा था कि मान लो लड़की मर जाय···

स्टेनो . मरना इतना आसान होता है ? ओफ् मुझे आज भी याद है जिस वक्त धमाके के साथ मिट्टी के तेल ने आग पकड़ी थी, मुझे लगा जैसे किसी ने मेरी खाल चीर कर अलग कर दी हो···और आप ऐसे वक्त में सांस भी नहीं ले सकते। नाक के अन्दर फेफड़ों तक आग की लपट घुसती है तो कैसा लगता है···साँस के लिए मुँह खुलता है तो वहां से भी लपट अन्दर चली जाती है···

अफसर : खैर, तो मैं उस अफसर की बात कर रहा था···

स्टेनो : **(भावुक होकर)** यानी आप···आप सुनना नहीं चाहते। इतना भी आप नहीं कर सकते कि जो हुआ उसे आप सुन लें···

अफसर : ये मैंने कब कहा ? मैं तो सिर्फ यह कह रहा था कि लड़की अगर मर जाय तो उस अफसर को अपने साथ कुछ करने देगी ? **(वक्फा)** यानी मान लो लड़की··· यानी लड़की फिर उससे अलग सरक कर बैठने की कोशिश तो नहीं करेगी ?

स्टेनो : मगर सर, मैं क्या करती, बीच-बीच में वेयरा जो आ जाता था।

अफसर : हाँ, वो तो ठीक है। लेकिन मान लो···अच्छा तुम अभी की बात ले लो···इस वक्त की···तुम तो अभी मर चुकी हो न ?

स्टेनो : हाँ। मगर किस कदर तकलीफ से मौत हुई है मेरी···मैं वही तो बता रही थी···जलते हुए दर्द की वजह से मैंने होंठ दाँतों में दबाया तो कागज की झिल्ली जैसी अजीब-सी चीज़ उधड़ कर दाँतों में आ गई। वह शायद होंठों की झुलसी हुई खाल रही होगी।···

अफसर : मैं बिल्कुल दूसरी बात कह रहा था मिस रूपा···एक मिनट मेरी बात सुन लो···

स्टेनो : जी···

अफसर : तुम तो अब मर चुकी हो न ?···

स्टेनो : जी···

अफसर : तो···?

स्टेनो : लेकिन सर, मेरी मौत मामूली नहीं है। आप इसे छोटी बात मत समझिएगा। और फिर मैंने किसी वजह से खुद-कशी की थी।

अफसर : हाँ, वो तो ठीक है। मगर तुम मर चुकी हो न ?

स्टेनो : जी !

अफसर : अब मान लो कोई आदमी···या मान लो मैं

[कहते-कहते रुक जाता है।]

स्टेनो : जी ? आप क्या ?

अफसर : तुम मर चुकी हो मान लो मैं तुम्हें छू लूँ ? **(स्टेनो सिर झुका लेती है)** मान लो मैं तुम्हें अपनी गोद में बिठा लूँ···या चूम लूँ···

स्टेनो : मैं क्या कह सकती हूँ ?

अफसर : मेरा मतलब है, तुम मर चुकी हो, मैं तुम्हारे साथ कुछ भी करूँ, क्या तुम विरोध करोगी ?

स्टेनो : जी···हाँ ।

अफसर : बट ह्वाई ? क्यों ? यू आर डेड । तुम मर चुकी हो । तुम्हें हक क्या है···नोटबुक लो लिखो···आफिस आर्डर नम्बर सच एण्ड सच । डेटेड सो एण्ड सो···सब्जेक्ट···

[स्टेनो फिर रोने लगती है । अफसर रुक जाता है ।]

अफसर : मैं तो दरअस्ल एक बात पूछ रहा था, एक तर्क खोज रहा था । तुमने गलत समझा । और फिर तुम गलत बयान भी दे रही हो । मरी हुई लड़की विरोध नहीं करती । **(स्टेनो चुप)** क्यों ? बोलती क्यों नहीं हो ? मरी हुई लड़की को क्या इस तरह जवाब देना चाहिए ? और फिर यह मामला अनुशासन का भी है । मैं तुम्हारे खिलाफ अनुशासन की कार्यवाही कर सकता हूं तुम्हें सस्पेंड कर सकता हूं···

[स्टेनो रोती रहती है]

अफसर : **(थाड़ी देर उलझन में बैठा उसे देखता रहता है । फिर बेचैन होने लगता है और सहसा गुस्से में आ जाता है ।)** व्हाट डू यू मीन बाई दिस ? इस तरह रोने की तुक क्या है ? क्या किया है मैंने कि तुम रो रही हो ? **(बोलते-बोलते उठ जाता है)** मैंने कोई गाली दी ? मैंने तुम्हारी बेइज्ज़ती की ? मैंने कोई बलात्कार किया ? मैंने सिर्फ एक बात कही है और वह मेरा हक है । पावर्स हैव बीन डेली गेटेड टु मी । मुझे कुछ अधिकार दिए गए हैं, मैंने सिर्फ उन्हीं का जिक्र किया था । पाँच बरस···पूरे पाँच बरस···तुम इस दफ्तर में रही हो लेकिन सिर्फ आज मैं कुछ पूछना चाहता था । पाँच बरस

नहीं पूछा । कभी नहीं पूछा । तुम्हें याद है एक बार हम काफी पीने गए थे और हर दो मिनट के बाद बेयरा उधर आ निकलता था । न भी आता तो क्या था । मैं तुम्हारे साथ कुछ करने नहीं जा रहा था । आखिर मुझे एक पद मिला है, अधिकार मिले हैं । क्यों मिले हैं ? काश तुम जान पातीं रूपा । उन्होंने···उन्होंने ये अधिकार···ये अधिकार उन्होंने मेरे कंधों से मेरे बाजू उतारने के बाद दिए थे । अब मेरे बाजू नहीं हैं···मेरे हाथ नहीं हैं रूपा । मैं किससे कहूँ ? कह किससे सकता हूं ? मैंने कभी कहा भी नहीं । और अब कहने से फायदा भी नहीं है । एक दिन उन्होंने मुझे कुर्सी से धकेल दिया और मेरी जगह एक ओहदा बैठा गए, एक स्टेटस, एक पद बैठा गए । मुझे धकेल कर एक ओहदा बैठा गए, एक पद··· **(सहसा दयनीय होकर)** रूपा, मैं तुम्हें छू सकता हूं ? मेरा मतलब है, क्या मैं तुम्हें छू लूँ ? **(रूपा चुपचाप उसे देखती है । अफसर हाथ बढ़ाकर बेहद उत्सुकता के साथ उसे छूता है । डरता है और खुश होता है ।)** मैं नाहक इतना परेशान हो रहा हूं न ? मैं··· मैं···

[उसका हाथ बाँह से पीठ तक फिसलता है । फिर सहसा वह भावाविष्ट हो जाता है । उसे गर्दन के पास चूमने लगता है । लेकिन कुछ याद करके उसे छोड़कर पहले दरवाजा ठीक से बन्द करता है । दरवाजा बन्द होते देखकर बाकी क्लर्क सहज हो जाते हैं लेकिन "क्लर्क-3" सहसा उत्तेजित हो जाता है । अफसर जितनी देर में दरवाजे को अन्दर से बन्द करता है

उतनी देर में रूपा उठकर साड़ी उतारने लगती है। अफसर उसे साड़ी उतारते देखता है और पसीना पोंछता है फिर उसे याद आता है तो वह खुद भी अपनी कमीज कांपते-लड़खड़ाते उतारता है।]

दूसरा क्लर्क : (ऊँची आवाज में, अखबार से) साप्ताहिक भविष्य··· कर्क राशि। इस राशि वाले व्यक्ति के पारिवारिक जीवन में भारी उद्विग्नता पैदा हो सकती है। प्रेम-सम्बन्ध टूटने का···

तीसरा क्लर्क : आप मेरा भविष्य पढ़ रहे हैं ?

दूसरा क्लर्क : किसी का भी भविष्य हो सकता है।···प्रेम सम्बन्ध टूटने का···

तीसरा क्लर्क : यह भविष्य मेरा है। और तुम्हें इस बात का हक नहीं है कि तुम मेरा भविष्य पढ़ो।···कोई हक नहीं है।

[क्लर्क इतने बल से अन्तिम बात कहता है कि लोग चुप।

अफसर रूपा के कंधे पकड़ता है फिर जैसे कोई एकान्त और गोपनीय जगह खोजने लगता है। रूपा को छोड़कर अपनी मेज के पीछे से अपनी कुर्सी, वेस्ट पेपर बास्केट आदि हटाता है। डिस्पैचर शी-शी की आवाज करके सबका ध्यान आकृष्ट करता है और अफसर के कमरे की ओर इशारा करता है। दूसरा क्लर्क अखबार रख कर अन्दर तक आता है और चाबी के सूराख से अन्दर झाँकता है। अफसर रूपा को मेज की आड़ में ले जाता है। दूसरे क्लर्क

को हटाकर पहला क्लर्क अन्दर झाँकता है। शेष उत्सुक।]

तीसरा क्लर्क : वे लोग क्या कर रहे हैं ?

[लोग उत्तर नहीं देते एक-दूसरे को हटा कर अन्दर देखते हैं।]

तीसरा क्लर्क : मैंने पूछा, तुम लोग देख क्या रहे हो ? क्या हो रहा है वहाँ ? वे लोग क्या कर रहे हैं ?

[लोग अन्दर देखते रहते हैं। तीसरा क्लर्क उत्तेजित होकर पैर पटकता हुआ उनके करीब आता है।]

तीसरा क्लर्क : (झटककर लोगों को वहाँ से हटाते हुए) क्या देख रहे हो अन्दर तुम लोग ? अपना-अपना काम क्यों नहीं करते ?

[अफसर इनकी आवाज सुनकर आधा उठ कर देखता है और ठीक से सुनने की कोशिश करता है। क्लर्क निराश होकर अपनी-अपनी मेजों पर लौटते हैं।]

तीसरा क्लर्क : किसी से उसकी मौत के बाद भी काम लेना कोई बहुत अच्छी बात नहीं होती।

दूसरा क्लर्क : तुम्हारा मतलब स्टेनो से काम कराया जा रहा है। तुम्हें पता है वहाँ क्या हो रहा है ?

तीसरा क्लर्क : कुछ भी हो रहा हो। (बात बदलकर) यहाँ कुछ अंधेरा नहीं है ? मेरा ख्याल है अंधेरा है···

दूसरा क्लर्क : तुम्हें पता है वहाँ क्या हो रहा है ? मेरा मतलब है वहाँ अन्दर···दोनों क्या कर रहे हैं पता है ?

तीसरा क्लर्क : (चपरासी से) ए, तुम यहाँ बल्ब क्यों नहीं लगाते ?

कितने दिन हुए यह बल्ब टूटे हुए ? मैं समझता हूं बहुत दिन हो गए हैं। बल्कि जब से मैं यहाँ हूं तभी से यह बत्ती टूटी हुई है।

चपरासी : **(दूसरे क्लर्क से)** आपने मुझसे कुछ कहा था ?

दूसरा क्लर्क : तुमसे ? नहीं।

डिपैंस्चर : मुझे ठीक से नहीं दीखा। तुमने देखा था अन्दर क्या हो रहा था।

तीसरा क्लर्क : **(डिस्पैंचर से)** क्यों इसके लिए कोई नोट लिखना पड़ेगा ? मेरा मतलब है यहाँ नया बल्ब लगाने के लिए।

[डिस्पैंचर अचम्भे के साथ तीसरे क्लर्क और टूटे बल्ब की ओर देखता है।]

तीसरा क्लर्क : मेरा मतलब है···बड़ा अजीब-सा लगता है न। रोशनी का बल्ब फूटा हुआ हो तो ऐसा लगता है जैसे अपने माथे के अन्दर की कोई चीज फूट गई है।

[अन्दर अफसर के साथ बार-बार कोई न कोई गड़बड़ी हो जाती है। कभी लेटते वक्त कोई चीज घुटने या कुहनी में टकराती है या गिर जाती है और हर बार उठकर वह उसे ठीक करता रहता है।]

तीसरा क्लर्क : और फिर ऐसी रोशनी में काम करने से आखें खराब हो जाती हैं। **(दूसरा क्लर्क हँसता है)** इसमें हँसने की क्या बात है ?

दूसरा क्लर्क : **(हँस कर)** बड़ा फनी लगता है न ? अजीब वाहियात··· सा क्यों ?

तीसरा क्लर्क : क्या बत्ती ?

दूसरा क्लर्क : **(पहले क्लर्क से)** तुम्हें तो दिखाई दिया होगा···मुझे बहुत साफ तो नहीं दिखाई दिया था · मेरा ख्याल है

कि उन लोगों ने सारे कपड़े नहीं उतारे थे। पीछे से कूल्हे दिख रहे थे न ? आदमी के कूल्हो के मांस पर ऐसे रद्दी दाग कैसे होते हैं···

चपरासी : **(सहसा उबकाई जैसी आती है।)**

पहला क्लर्क : तुम्हें क्या हुआ ?

चपरासी : **(और जोर से उबकाई)** पता नही, मितली आ रही है। पसीना जैसा भी छूट रहा हैं।···

पहला क्लर्क : तुमने खाया क्या है ? इधर-उधर की चीज़ें खा लेने से मितली आती है।

चपरासी : **(फिर मितली आती है।)**

पहला क्लर्क : लगता है तुम्हारी तबीयत खराब हो रही है। तुम छुट्टी ले लो ?

चपरासी : छूट्टी ? आज ?

डिस्पैंचर : आफिस आर्डर नम्बर सच एण्ड सच, डेटेड सच एण्ड सच···

कोरस : आफिस आर्डर नम्बर सच एण्ड सच। डेटेड सच एण्ड सच···सबजेक्ट···कर्मचारियों की हड़ताल···सभी कर्मचारियों को आगाह किया जाता है कि आगामी हड़ताल में शामिल होने, उसमें मदद करने, उसका प्रचार करने या उस दिन अनुपस्थित रहने पर सख्त अनुशासनात्मक कार्यवाही की जायेगी···

चपरासी : **(परेशान और ऊँची आवाज में)** मगर मुझे मितली आ रही है। मेरी तबीयत खराब हो रही है। **(उबकाई)**

डिस्पैंचर : लेकिन तुम्हें आज छुट्टी नहीं मिल सकती। रूल्स के मुताबिक···और फिर यहाँ कोई दवाई भी नही है।

है। मेरे पास एक्ज़िमा का मलहम है।···मेरी बीबी को जरूरत होती है न···

(बाहर अचानक नारे लगते हैं: इन्क्लाब-··· जिन्दाबाद ! हर जोर-जुल्म की टक्कर में··· हड़ताल हमारा नारा है। अफसर फिर हड़बड़ा कर उठ जाता है। इस बार दुबारा नहीं लेटता परेशानी ज़ाहिर करता हुआ कपड़े पहन लेता है। स्टेनो वहीं ज्यों की त्यों पड़ी रहती है।)

अफसर : (बाहर निकल कर) अभी नारे कौन लगा रहा था यहाँ ?

[सन्नाटा ! चपरासी की ओर देखकर]

क्यों जी ? अभी नारे कौन लगा रहा था ?

[चपरासी को उबकाई आ जाती है।]

ये क्या बदतमीजी है। ये आवाज़ें कैसी थीं ? कौन नारे लगा रहा था !

दूसरा क्लर्क : बाहर कुछ हड़ताली आ गये थे···

अफसर : हड़ताली आ गए थे···कहाँ ? बाहर ? दरवाजा बन्द है या खुला है ?

दूसरा क्लर्क : बन्द है सर !

अफसर : ठीक है ! आप लोग अपना काम कीजिए।

डिस्पैचर : सर, हम लोग हड़ताल पर नहीं जा रहे हैं लेकिन क्या हम पिकनिक पर जा सकते हैं ?

[अफसर उसे घूर कर चुप करा देता है।]

[बाहर नारे फिर लगने लगते है।]

दूसरा क्लर्क : कल हड़तालियों ने पत्थर फेंके थे। आज भी फेंक सकते हैं सर।

अफसर : क्या तुम उन लोगों को जानते हो ?

दूसरा क्लर्क : नहीं ! और सच यह है कि हम लोगों में से कोई भी उन्हें नहीं जानता।

पहला क्लर्क : लेकिन वे लोग हमें जानते हैं। हम सबको जानते हैं।

दूसरा क्लर्क : लेकिन मेरा ख्याल है कि हमें अपने काम से काम रखना चाहिए ! हम उन्हें नहीं जानते, बस !

डिस्पैचर : आफिस आर्डर नम्बर सच एण्ड सच, डेटेड सच एण्ड सच···।

कोरस : आफिस आर्डर नम्बर सच एण्ड सच, डेटेड सच एण्ड सच। विषय···कर्मचारियों की हड़ताल···सभी कर्मचारियों को आगाह किया जाता है···

दूसरा क्लर्क : सर, एक सवाल पूछ सकता हूँ ?

अफसर : पूछो।

दूसरा क्लर्क : क्या मिस कँचन रूपा हड़ताल में हिस्सा ले सकती हैं ?

अफसर : नहीं। यह होम मिनिस्ट्री का मामला है।

पहला क्लर्क : और सर मरे हुए लोग हड़ताल में कभी हिस्सा नहीं लेते।

अफसर : (घूर कर)तुम्हारी बात का कोई खास मतलब है ?

[चपरासी को उबकाई आती है।]

अफसर : उफ्, तुम्हारी यह उबकाई···तुम कोई इलाज नहीं करते ?

चपरासी : मुझे छुट्टी चाहिए सर।

अफसर : छुट्टी ? बीमारी नही, मक्कारी है। मुझे मालूम है तुम्हें क्यों उबकाई आ रही है ? तुम हड़ताल में शामिल होना चाहते हो। मुझे मालूम है हड़ताल में शामिल न होने पर मितली आती है। मगर मैं आगाह कर देना चाहता हूँ, सख्त डिसिप्लिनरी एक्शन होगा···

डिस्पैचर : रूल चौदह···फण्डामेण्टल रूल्स···रूल चौदह···

कोरस : फण्डामेण्टल रूल्स मेड बाई गवर्नर इन काउन्सिल··· रूल चौदह···

[नारे]

अफसर : लगता है वे लोग जुलूस निकाल रहे हैं।

दूसरा क्लर्क : सर, हमें उधर ध्यान नही देना चाहिए।

डिस्पैचर : यह बात ठीक है। ध्यान देने की जरुरत ही नहीं हैं।

दूसरा क्लर्क : बल्कि हमें कोई दूसरी ही बात करनी चाहिए।

अफसर : अँ ? दूसरी बात ?

[सन्देह से हर एक का चेहरा देखता है और अपने चेम्बर में जाता है। लड़की अभी उसी तरह लेटी है। लड़की के करीब जाकर]

अफसर : अरे तुम उठी नहीं ?

[रूपा सिर्फ पेटीकोट पहने हुए और ब्लाउज के बटन बन्द करती हुई उठकर खड़ी होती है।]

अफसर : तुम अभी तक उठी क्यों नहीं थीं ?

रूपा : मैं समझी थी कि आप अभी कुछ करेंगे···

अफसर : मैं—हां, लेकिन तुम साड़ी जल्दी से पहन लो।

[साड़ी देता है। दूसरा क्लर्क और डिस्पेचर फिर दरवाजे के सूराख से अन्दर झाँकने की कोशिश करते हैं। चपरासी उबकाई लेता है। उबकाई से चौंक जाते हैं। अन्दर रूपा साड़ी पहनती रहती है और अफसर अपनी कुर्सी पर बैठता है।]

डिस्पैचर : तुम्हें इतनी उबकाईयाँ क्यों आ रही हैं जी ?

चपरासी : वो मरी हुई है न ?

डिस्पैचर : हाँ तो ? तुम दवा खाया करो। वैसे मेरे पास तो सिर्फ एक्जिमा का···

चपरासी : वो क्या कर रहा है उसके साथ। वो मरी हुई है न ?

[डिस्पैचर उपेक्षा से देखकर दुबारा झाँकने लगता है। चपरासी फिर उबकाई लेता है]

डिस्पैचर : क्या बात है जी ? एक तो मेरी नजर कमजोर है और ऊपर से तुम उबकाई लेकर डिस्टर्ब कर देते हो।

चपरासी : आखिर वो करता कैसे है ? मरी हुई है न···

डिस्पैचर : अरे, तो क्या तुम अपने आपको बहुत ज्यादा जिन्दा समझ रहे हो ?

चपरासी : एक आदमी···कौन तो कहता था···एक आदमी मरी हुई औरत की नदी में बहाई लाश निकाल लेता था और उसका कफन उतारने के बाद··· (उबकाई लेता है)

[डिस्पैचर और दूसरा क्लर्क, दोनों सहसा उस छेद से अलग हो कर एक-दूसरे की ओर देखते हैं और फिर चपरासी की ओर।]

डिस्पैचर : तुमने क्या कहा ? उसका कफन उतारने के बाद क्या ?

चपरासी : वो आदमी नदी में बहती हुई औरत की लाश तैर कर निकाल लाता था। अक्सर वह सड़कर···फूल चुकी होती थी। उसे निकाल कर···

[उबकाई]

डिस्पैचर : (रूचि लेते हुए) उसे निकाल कर···फिर ?

[चपरासी बीमारी की घबराहट में उन्हें देखता रहता है]

दूसरा क्लर्क : तुमने कहीं अखबार में पढ़ा था ?

डिस्पैचर : किससे सुना था ?

दूसरा क्लर्क : वह आदमी था कौन ? कहाँ की बात कर रहे हो।

[तीसरा क्लर्क चुपचाप उठकर दोनों के पीछे अफसर के चेम्बर के दरवाजे वाले सूराख से पीठ अड़ा कर खड़ा हो जाता है।]

डिस्पैचर : बताओ न। वह आदमी औरत की लाश नदी से निकाल लेता था और कफन उतार कर···फिर ?

दूसरा क्लर्क : कफन उतार कर उसके साथ क्या करता था ? उसके साथ कुछ करता था न ?

डिस्पैचर : (तीसरे क्लर्क से) क्यों, तुम्हें पता है ? क्या था वह किस्सा ?

दूसरा क्लर्क : (सहसा ध्यान देकर तीसरे क्लर्क से) मगर तुम यहाँ इस तरह आकर क्यों खड़े हो गए ?

तीसरा क्लर्क : क्यों ?

दूसरा क्लर्क : हटो, अन्दर देखूँ क्या हो रहा है।

तीसरा क्लर्क : (दृढ़ता से) नहीं, कतई नहीं। इस बार अन्दर देखा तो अच्छा नही होगा।

डिस्पैचर : क्या मतलब ?

तीसरा क्लर्क : मैं यह बर्दाश्त नहीं कर सकता।

डिस्पैचर : (हंसकर) तुम खुद भी तो देख सकते हो ?

तीसरा क्लर्क : (परेशान होकर) नहीं, नहीं। मैं कैसे देख सकता हूँ।

पहला क्लर्क : (झपट कर आते हुए) ठहरो। (तीसरे क्लर्क से) तुम··· तुम्हारा···मेरा मतलब है कंचन रूपा से तुम्हारा कोई रिश्ता है ? मुझे लगता है। (डिस्पेचर से) तुम्हारा क्या ख्याल है, मेरा सन्देह ठीक है ?

दूसरा क्लर्क : क्यों, तुम्हारा मिस रूपा से कोई रिश्ता है ? क्या हो तुम उसके ?

[तीसरा क्लर्क घबराहट से भरा हुआ वहां से हटकर अपनी सीट पर सिर पर हाथ टेक कर आ बैठता है।]

डिस्पैचर : तुम कुछ छुपा रहे हो। छुपा रहे हो न ?

दूसरा क्लर्क : क्या यह सच है कि तुम्हारा मिस रूपा से कोई रिश्ता है ?

तीसरा क्लर्क : (यातना से फूटकर) है। है।

[चीख सुनकर अफसर चौंकता है और लपक कर बाहर आ जाता है।]

अफसर : (सबकी ओर सन्देह से घूरते हुए) अभी मैंने कुछ सुना था। नारा लगाया था न ? किसने लगाया था ? (सभी चुप) मेरी बात का जवाब नहीं दिया ? अभी नारा कौन लगा रहा था ?

[पहला क्लर्क चुपचाप हटकर अपनी मेज पर चला जाता है। अफसर घूरता हुआ उसके निकट आता है।]

अफसर : क्यों ? नारे तुम लगा रहे थे ?

पहला क्लर्क : सर, पता नहीं। मगर···

अफसर : क्या मगर ? तुम नारा लगा रहे थे ?

पहला क्लर्क : सर, मुझे लगा जैसे···

अफसर : मेरी बात का जवाब दो, तुम नारा लगा रहे थे ?

पहला क्लर्क : जी···हाँ।

[दूसरा क्लर्क डर कर अपनी मेज पर जाता हैं और अखबार से चेहरा ढंक लेता है]

डिस्पैचर : आफिस आर्डर नम्बर सच एण्ड सच, डेटेड···

कोरस : आफिस आर्डर नम्बर सच एण्ड सच, डेटेड सच एण्ड सच, सब्जेक्ट···कर्मचारियों की हड़ताल···

अफसर : (बहुत क्रोध में बोलता है और उसके बोलते ही कोरस शान्त) इसने मेरा रिकार्ड खराब कर दिया। बरबाद कर दिया मुझे। किसने कहा था तुम नारा लगाओ ?

चपरासी : (निकट जाकर) क्या तुम झूठ नहीं बोल रहे हो ?

[पहला क्लर्क उत्तर नहीं देता]

अफसर : क्या होगा मेरी फाइल का अब ? मैंने कहा था कि मेरे

दफ्तर में कोई हड़ताली नहीं है···मेरी फाइल का क्या होगा अब ?

चपरासी : (पहले क्लर्क से) तुमने तो नारे नहीं लगाए। किसी ने भी नहीं सुना। तुम झूठ नहीं बोल रहे हो ? तुम कह क्यों नहीं देते कि तुमने नारे नहीं लगाए ?

पहला क्लर्क : **(फीकी मुस्कुराइट आकर बुझ जाती है।)**

अफसर : (निराश) क्या होगा अब ?

डिस्पैचर : फण्डामेण्टल रूल्स, मेड बाई गर्वनर जनरल इन काउंसिल।

कोरस : फण्डामेण्टल रूल्स, मेड बाई गवर्नर जनरल इन काउंसिल···

अफसर : कुछ नहीं हो सकता। कुछ भी नहीं हो सकता अब। **[निराश होकर फिर पहले क्लर्क के सामने आता है]** क्या यह ठीक है कि तुम झूठ बोल रहे हो ?

पहला क्लर्क : **(उसी तरह खोखली, क्षणिक मुस्कराहट।)**

अफसर : ओफ, तुम बहुत घटिया धोखेबाज हो। और मक्कार और कामचोर और···और···और तुम सीधे बात क्यों नहीं करते ? मतलब कि तुम ठीक से क्यों नहीं खड़े होते ? हाथ जेब से बाहर निकालो।

[पहला क्लर्क ज्यों का त्यों खड़ा रहता है।]

अफसर : **(झटके से उसकी बांह खींच कर जेब से निकालते हुए)** इसे बाहर निकालो।

[जेब से हाथ निकलने पर चौंकता है। उसमें पंजा नहीं है।]

अफसर : **(परेशानी और घबराहट)** ओह, तुम्हारे हाथ नहीं है ?

पहला क्लर्क : मैं क्या करूँ सर, वे लोग ट्राम की खिड़कियों में सींखचे लगा देते हैं। और फिर मैंने···

अफसर : गलत बात है। बिल्कुल गलत है। आई काण्ट टालरेट इट ?

[आस्तीन के अन्दर झाँकता है और अन्दर उँगलियाँ डाल कर जो गद्दियाँ निकालता है वे सैनिटेरी टावेल हैं। आखिरी गद्दी में काफी खून दीखता है।]

अफसर : **(कंधे की ओर इशारा करके)** तुम्हारे वहाँ पर कोई वैसी चीज है ?

पहला क्लर्क : जी सर। अभी ठीक नहीं हुआ।

दूसरा क्लर्क : **(अखबार से पढ़ता है)** राजधानी, सतह जुलाई। आज शाम डाउन स्ट्रीट पर भीड़ से लदी एक ट्राम से लटक कर सफर करते हुए गिर जाने के कारण एक आदमी का हाथ कट कर अलग हो गया। व्यक्ति को तुरन्त अस्पताल ले जाया गया जहाँ उसकी हालत सुधरती बताई जाती है···

अफसर : क्या यह सच है ? तुम ट्राम में खिड़की के सींखचों से लटक कर सफर करते हो ?

पहला क्लर्क : मैं क्या करूँ सर, वे लोग ट्राम की खिड़कियों में सींखचे लगा देते हैं।

अफसर : **(झल्लाकर)** व्हाट कैन आई डू ? मैं क्या करूँ अगर वे लोग सींखचे लगा देते हैं ? यह जिम्मेदारी दफ्तर की नहीं है। अच्छा होता कि तुम लोग हाथ रखते ही नहीं। बल्कि दफ्तर यह भी पूछ सकता है कि हाथ आए कहाँ से ? क्या इनके लिए तुमने परमिशन ली थी ? तुमने हाथों के लिए इजाज़त ली थी ?

पहला क्लर्क : **(असहाय होकर दूसरा हाथ देखता है)**

अफसर : देखता हूं। अभी देखता हूं।

[बड़बड़ाता हुआ चेम्बर में जाता है। साड़ी पहन चुकने के बाद बैठी रूपा सहसा उठती है।]

अफसर : क्या है ? तुम यहाँ क्या कर रही हो ?

रूपा : मैंने सोचा शायद आप मेरे साथ कुछ करेंगे न ?

अफसर : (घबराकर) करेंगे ? गेट आउट आफ हियर। तुम मुझे भ्रष्ट करना चाहती हो। मुझे तबाह करना चाहती हो ? गेट आउट। आउट।

[रूपा बाहर आकर एक बार चारों ओर देखती है। फिर एक-एक चीज़ छूती है। उसके करीब आकर डिस्पैचर उसे छूते-छूते रुक जाता है।]

दूसरा क्लर्क : क्यों क्या हुआ ?

डिस्पैचर : (अजीब खोखली मुस्कुराहट से) मेरी नज़रें कुछ कमज़ोर हैं न, लेकिन मेरा ख्याल है, इसे अफसोस हो रहा है।

दूसरा क्लर्क : अफसोस ? अफसोस क्या ? मुझे लगता है, तुम हम लोगों को झुठला रहे हो। तुम दरअस्ल लड़की को छूना चाहते हो।

डिस्पैचर : हम सब यही चाहते हैं। कौन नहीं छूना चाहता। (गुस्से में आ जाता है) छुपाने से कोई फायदा है, बताओ ? कौन नहीं छूना चाहता ? पाँच बरस हो गए इसी तरह (कुछ ठहर कर) और फिर मेरी कोई बुरी नीयत नहीं है। बुरी नीयत होती तो···आप जानती हैं···आप बताइए मिस रूपा, हमारी कोई बुरी नीयत रही है ?

[पहला क्लर्क सारे टावेल उठा कर झाड़-झाड़ कर ड्राअर में रखता है।]

मिस रूपा ?

[वह बात सुने बिना हर चीज़ छूती हुई अपने टाइप-राइटर के करीब जा बैठती है और उसे नाहक उंगलियों से खेलती है।]

दूसरा क्लर्क : (पहले क्लर्क से) सुनो, तुम कह रहे थे मिस रूपा का कोई रिश्ता है···उससे। (तीसरे क्लर्क की ओर इशारा करता है।)

पहला क्लर्क : मुझे नहीं मालूम।

दूसरा क्लर्क (थोड़ा-सा निराश)

डिस्पैचर : तुम खुद रूपा से क्यों नहीं पूछ लेते ?

दूसरा क्लर्क : हाँ, यह ठीक बात है (रूपा से) सुनिए।

[चपरासी को उबकाई आती है।]

डिस्पैचर : अब क्या हो गया ?

चपरासी : तुम लोग उसका पीछा क्यों नहीं छोड़ देते ?

[लोग ठिठक जाते हैं।]

तीसरा क्लर्क : ही इज राइट। वो ठीक कहता है। हमें उसमें रुचि लेने की जरूरत नहीं है। हम। (चुप हो जाता है।)

दूसरा क्लर्क : मैं एक बात कहूँ ?

तीसरा क्लर्क : (चुप है।)

डिस्पैचर : कहो। कोई मज़ेदार बात है ?

दूसरा क्लर्क : मज़ेदार ?

डिस्पैचर : मेरा मतलब है जैसे वो बात थी···वो नदी वाली··· वह औरत की लाश निकाल लाता था और··· (चपरासी की ओर) क्यों जी ? निकाल लाता था। फिर ?

[चपरासी को उबकाई आती है।]

चलो खैर। (दूसरे क्लर्क से) तुम क्या कह रहे थे ?

दूसरा क्लर्क : इसकी तबीयत खराब ही होती जा रही है।

डिस्पैचर : तबियत खराब है तो क्या किया जाय । सरकार इसलिये तो तनख्वाह नहीं देती । और फिर छोटे आदमियों में यह बहुत बड़ी बुराई होती है । इसी लिए तो ये लोग तरक्की नहीं कर सकते । हाँ, तुम कोई मज़ेदार बात कह रहे थे न ?

दूसरा क्लर्क : मज़ेदार ? यह किसने कहा ?

डिस्पैचर : ओह ! (**खामोश**) कहो तो मैं सुनाऊँ तुम्हें । अजीब-सा किस्सा है । सुनाऊँ ? अभी और करना भी क्या है ? सुनाऊँ ?

दूसरा क्लर्क : (**रूपा को दिखाकर**) वो है ।

डिस्पैचर : तो ?

दूसरा क्लर्क . उसकी मृत्यु हो गई है । उसके सामने ऐसी बातें··· दरअसल हम लोगों को संवेदना प्रकट करनी चाहिए थी ? बल्कि उसके घर जाकर शोक प्रकट करना चाहिये था । यह अच्छा नहीं है ।

डिस्पैचर : हाँ, यह ठीक है । मगर अब देखो, सभी पर बीतती है। सभी के साथ हो जाता है । वैसे तुम्हारी बात ठीक है लेकिन मुझको ही देखो । मैं अभी बता रहा था···कोई पाँच बरस पहले की बात है, तब मैं जनरल स्टोर्स में काम करता था···

दूसरा क्लर्क : तुम्हारा अपना किस्सा है ?

डिस्पैचर : नहीं, मेरा अपना नहीं है । मेरे साथ एक काम करता था, उसका किस्सा है और एक और आदमी काम करता था···मेरे साथ दो आदमी काम करते थे । वह दूसरा आदमी बहुत लम्बा था और उसकी बीवी लँगड़ी थी ।

दूसरा क्लर्क : और पहला आदमी ?

डिस्पैचर : पहला आदमी ? ओह, वो···वो···यों ही मामूली था । उसकी बीवी को एग्ज़िमा हो गया था ।

दूसरा क्लर्क : तुम्हारी बीवी को भी तो एग्ज़िमा है । है न ?

डिस्पैचर : ये···मेरी बीवी को···नहीं उसे एग्ज़िमा है···हाँ हाँ··· उसे भी एग्ज़िमा है । लेकिन वह ठीक हो जायेगा । मैं ये मलहम ले जाता हूँ न । (**जेब से डिब्बी निकालता है**) देखो । ग्यारह साल हो गए हैं, इसका इस्तेमाल करते मगर अब वह बहुत कम बढ़ता है । पहले हर साल जितना बढ़ता था उससे सिर्फ दस फीसदी ।

दूसरा क्लर्क : लेकिन बढ़ता तो अब भी है न ?

डिस्पैचर : बढ़ता है ? हाँ । बढ़ता है । लेकिन फिर भी उतनी तेजी से नहीं । हाँ, तो मैं वह किस्सा सुना रहा था वो लम्बा वाला आदमी बड़ा अजीब था । वह हमेशा कोई न कोई औरत खोज लेता था । एक दिन उसने मुझसे कई घंटे बातें की । औरतों की । उसने कहा, अगर मैं चाहूँ तो वह मुझे भी किसी औरत के पास ले चलेगा ।

दूसरा क्लर्क : तुमसे बात हुई ? लेकिन तुम बता रहे थे कि एक और आदमी था जिसकी बीवी के एग्ज़िमा था ।

डिस्पैचर : हाँ, मेरा वही मतलब है । लम्बे आदमी ने उस आदमी को किसी औरत के पास ले चलने को कहा । वह इतना उत्साहित हो गया कि चलते वक्त एग्ज़िमा की दवा खरीदना ही भूल गया ।

दूसरा क्लर्क : एग्ज़िमा की दवा क्या करनी थी ?

डिस्पैचर : एक डिब्बी हफ्ते भर चलती थी न । वह खत्म हो गई थी । खरीदना मैं भूल गया···

दूसरा क्लर्क : तुम भूल गए ?

डिस्पैचर : मैं ? हाँ, मैं भी भूल गया था वैसे । लेकिन वह आदमी

भी भूल गया। औरत के पास जाने से पहले दोनों ने शराब पी। ताँगे पर दोनों गए। वैसी भीड़ वाली गली में टैक्सी जा भी नहीं सकती थी। जब वह मकान आ गया तो ताँगा रुकवा कर वह लम्बा आदमी उतर गया। उसने कहा कि तुम इन्तज़ार करो, पहले मैं निबट आऊँ। वह औरत ज्यादा देर रुकने नहीं देती है। बाद में तुम चले जाना। थोड़ी देर बाद वह लम्बा आदमी वापस आया। आँख के इशारे से उसने बताया कि वह 'कर' आया है। फिर धीरे से बोला···'दस रुपये तुम्हारे भी दे आया हूँ। औरत अच्छी है···कह कर वह थका हुआ ताँगे में आ बैठा। ताँगे से उतर कर···धीरे-धीरे चला मैं···पहला मौका था···पैर वज़नी-वज़नी से लगने लगे···मन में अजीब गुदगुदी-सी भी लग रही थी। दरवाजा अन्दर से बन्द नहीं था। अन्दर बरामदे में ही वह खड़ी थी।···

[सीधे क्लर्क की आंखों में देखता है]

दूसरा क्लर्क : फिर ?

डिस्पैचर : (थोड़ा ठहर कर) फिर···अचानक मुझे याद आया··· बाप रे···एग्ज़िमा की दवा लाना तो मैं भूल ही गया था···एकदम मैं भागा···

दूसरा क्लर्क : एग्ज़िमा की दवा ?

डिस्पैचर : हां, वो क्या कहती। आखिर···मेरा मतलब है···वो क्या सोचती ? और फिर तुम शायद नहीं जानते हो··· जिन्दगी में कुछ भी नहीं चाहा, कुछ भी नहीं माँगा था उसने। और वह माँगती भी तो मैं देता कैसे ? एक मामूली काउंटर क्लर्क···सिर्फ मुझसे वह हफ्ते में एक डिब्बी एग्ज़िमा का मलहम चाहती रही है। देट डे

आई फैल्ट गिल्टी···मैं अपराधी जैसा महसूस कर रहा था उस दिन। (खामोशी) मुझे लगता है यह मलहम अच्छा नहीं है। बल्कि शायद नकली हो···देखना इसे ?

[मलहम की एक डिब्बी देता है।]

दूसरा क्लर्क : यहाँ है एग्ज़िमा ? मेरा मतलब है तुम्हारी बीवी के शरीर पर कहाँ एग्ज़िमा हुआ है ?

डिस्पैचर : (उसकी ओर देखकर आँखें हटा लेता है।) अरे··· बस है। कहीं भी। (डिब्बी ले लेता है) तुमने शादी नहीं की है। तुम्हें नहीं पता एग्ज़िमा क्या होता है। (तीसरे क्लर्क से) क्यों, गलत कह रहा हूं ? शादी न की हो तो पता नहीं लगता कि औरत के शरीर पर कहाँ-कहाँ एग्ज़िमा हो सकता है। यू डोण्ट नो। क्यों ?

तीसरा क्लर्क : मैं कैसे बता सकता हूं ?

डिस्पैचर : क्यों तुमने भी तो नहीं की शादी।

[तीसरा क्लर्क बिना उत्तर दिये उठकर दीवार की घड़ी के करीब जाकर साढ़े बारह बजा देता है और मंच के आगे आ खड़ा होता है। सभी क्लर्क वहीं आते हैं। कंचन रूपा घबराती है और उठकर अफसर के चेम्बर में आती है।]

स्टेनो : सर।

अफसर : कहो, कहो···

स्टेनो : सर, तो शोक सभा···

अफसर : (चौंककर घड़ी देखता है) ओह, मैं अभी आया···

स्टेनो : मगर सर, मैं क्यों नहीं हिस्सा ले सकती ?

अफसर : तुम ? मिस रूपा···इस दुनिया में बहुत कुछ ऐसा होता है जिसे हम नहीं चाहते फिर भी होता है और उसे एक्सेप्ट करना पड़ता है···स्वीकारना पड़ता है···

स्टेनो : तो फिर मुझे घर जाने दीजिए ।

अफसर : नहीं, नहीं ! घर नहीं । तुम जानती हो, एक डिसिप्लिन होती है···अनुशासन । बाइस बरस हुए मुझे नौकरी करते । दस बरस पहले मेरी तरक्की हुई थी । अब मैं अपने से छोटे से बात नहीं कर सकता न । और इस दफ्तर में मेरे बराबर का दूसरा नहीं है । तुमसे भी यहाँ दफ्तर में मैं बात नहीं कर सकता था । अब दूसरी बात है । तुम मर चुकी हो···लेकिन एक बात बताऊँ दफ्तर से बाहर मैंने तुमसे बात की थी । दफ्तर के अन्दर कभी नहीं की थी । अब कर रहा हूँ । बड़ा अच्छा लग रहा है । अब तो मैं बात कर सकता हूँ···तुम्हारे मरने के बाद अब पहली बार दफ्तर में भी बातें कर सकता हूँ···अच्छा लगता है···खैर, तुम··· **(सोचता है)** तुम यहाँ बैठो । चाहो तो मन ही मन यहीं पर···या यहीं से तुम दो मिनट का मौन रख लेना···ठीक ?

[उसे उत्तर का मौका नही देता । वह भी मंच के सामने आ जाता है । वह भाषण देने की अदा में खड़ा होता हैं रूपा स्वयं भी चेम्बर के दरवाज़े पर-आ खड़ी होती है ।]

अफसर : **(थोड़ा हाँफते हुए)** सारी जेण्टलमैन दैट आई एम लेट । खैर आप लोग कार्यवाही शुरू कीजिए । पहले क्या क्रार्यक्रम है···जन गण मन होगा ?

डिस्पैचर : आफिस आर्डर नम्बर सच एण्ड सच । डेटेड सच एण्ड सच···

कोरस : आफिस आर्डर नम्बर सच एण्ड सच । डेटेड सच एण्ड सच···सब्जेक्ट···स्वर्गीया कंचन रूपा की मृत्यु पर शोक सभा···

दूसरा क्लर्क : और सर हारमोनियम के बिना जन गण मन ठीक भी नहीं है ।

अफसर : खैर कोई बात नहीं । जो भी आइटम हो जल्दी कीजिए । वैसे अगर आप कहें तो मैं ही बोल दूँ ? मेरे पास वक्त ज़रा कम है । **(खामोशी)** शुरू करूँ ? **(खामोशी)** तो मुझे खुशी है कि मुझे आज आपने इस जलसे में शरीक होने का मौका दिया···

डिस्पैचर : आफिस आर्डर नम्बर सच···

अफसर : ओह हाँ । ठहरिए···मुझे अफसोस है कि आज हमारे देश का एक महान···हमारा देश···मतलब कि हिन्दुस्तान··· **(गड़बड़ा जाता है ।)** मेरा मतलब···हिन्दोस्तान···हम···

दूसरा क्लर्क : हिन्दी हैं हम··· **(डर कर चुप हो जाता है ।)**

अफसर : तो हिन्दी हैं हम वतन है हिन्दोस्ताँ हमारा···

कोरस : सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा
हिन्दी हैं हम वतन है ये···ये··· **(भूल जाते हैं ।)**

स्टेनो : **(आगे आकर)** ये गुलसिताँ हमारा ।

कोरस : ये गुलसिताँ हमारा ।

स्टेनो : सर, ये गाना मैंने स्कूल में याद किया था ।

अफसर : खैर, तो मैं कह रहा था कि वह हमारे कार्यालय का एक मेहनती और ईमानदार···

दूसरा क्लर्क : सर स्टेनो एक लड़की थी···

अफसर : अँ ? हाँ स्टेनो एक लड़की थी···तो स्टेनो एक लड़की थी···स्टेनो··· **(भूल जाता है । दूसरे क्लर्क से)** तुम शोक समाचार पढ़ दो···

दूसरा क्लर्क : **(लपककर अखबार ले आता है)** श्रीमान घड्यो मल बूटा

राम के दादा श्रीमान मुसद्दीलाल जी गंगानगर वाले का कल रात हृदयगति रुक जाने से देहान्त हो गया। उनकी पुण्यात्मा शान्ति के साथ परमधाम को प्राप्त हुई।

अफसर : अभी आप यह शोक समाचार सुन रहे थे। अब हमारी आज की यह सभा समाप्त होती है। कल सबेरे साढ़े छह बजे तक के लिए हमें आज्ञा दीजिए। जयहिन्द।

सभी लोग : जयहिन्द !

अफसर : तीन बार हमारे साथ बोलिए···जयहिन्द।

सभी : जयहिन्द !

अफसर : ज़रा जोर से बोलिए···जयहिन्द।

सभी : जयहिन्द।

अफसर : जयहिन्द !

सभी : जयहिन्द।

[तालियां बजाते हैं।]

[सभी अपनी-अपनी मेजों पर लौटते हैं। पहला क्लर्क ड्राअर से टावेल निकालकर उन्हें अपनी आस्तीन में भरने की कोशिश करता है।]

दूसरा क्लर्क : (निकट आकर) क्या कर रहे हो ?

[पहला क्लर्क ज्यों का त्यों टावेल भरने की कोशिश करता रहता है।]

अफसर : (स्टेनो से) तुम कह रही थीं कि तुम घर जाना चाहती हो।

स्टेनो : जी !

अफसर : लेकिन मेरा मतलब है तुम मर चुकी हो फिर घर···?

[स्टेनो चुप]

पहला क्लर्क : (दूसरे क्लर्क से) तुम मेरी मदद करोगे ?

[दूसरा क्लर्क आस्तीन में टावेल भरने में मदद करता है।]

अफसर : सुनो, यहाँ गड़बड़ी बहुत होती है।

स्टेनो : जी ?

अफसर : मेरा मतलब है···याद नहीं है···जब हम लोग यहाँ लेटे थे, कभी स्टूल पैर से टकरा जाता था, कभी लैम्प गिर जाता था, कभी घुटना पाये में अड़ जाता था··· (हँसता है) असुविधा हो रही थी न ? ठहरो मुझे एक बात सूझी है···कल हड़ताल है। हो सकता है, बसें वगैरह बन्द रहें···हड़ताल के दिन उन्हें बन्द होना भी चाहिए। हम लोग आज रात यहीं सोने का इन्तज़ाम कर सकते हैं। क्यों ? हमें थोड़ा इन्तज़ाम करना होगा। मसलन सोने के लिए चारपाइयाँ। बिस्तरे और रात के खाने, सुबह के और कल के लंच वगैरह का सामान···तुम्हें जाने की जरूरत क्या है रूपा ? यू नो···चारपाई पर ऐसी कोई झंझट की बात नहीं होती···

[स्टेनो तेजी से निकल कर अपनी मेज पर आ बैठती है।]

दूसरा क्लर्क : (पहले क्लर्क की आस्तीन में सारे टावेल भर चुकने के बाद) तुमने अपना लंच बाक्स ट्राम की पटरियों से उठा लिया था ?

पहला क्लर्क : हाँ।

दूसरा क्लर्क : तुम्हारा जो हाथ कट गया उसी में तुमने लंच बाक्स ले रखा था न ?

पहला क्लर्क : हाँ ! तुम्हारे पास एक टावेल होगा ? मुझे लगता है मेरी आस्तीन में टावेल कम है।

दूसरा क्लर्क : टावेल मेरे पास कहाँ से आया। लेकिन तुमने बताया

नहीं कि तुमने लंच बाक्स हाथ कटने से पहले ही दूसरे हाथ में ले लिया था या बाद में उठाया था ?

पहला क्लर्क : बताया तो था कि मुझे पता नहीं। और फिर अब तो मुझे शक होने लगा है कि कभी यहाँ हाथ जैसी कोई चीज़ भी थी या नहीं ?

दूसरा क्लर्क : मैं जानता हूँ। कटने से पहले तक तुम्हारे इस कंधे पर एक हाथ था। अच्छा होता कि हाथ कटने के बाद तुमने जब अपना लंच बाक्स उठाया था उस वक्त वह हाथ भी उठा लिया होता।

पहला क्लर्क : लेकिन अब उस कटे हुए हाथ को उठाकर मैं करता भी क्या ?

दूसरा क्लर्क : हाँ तुम ठीक कहते हो ? लेकिन फिर भी, कम से कम उसे उठा ज़रूर लाना चाहिए था। वैसे तो हाथ मामूली सी चीज़ होता है लेकिन इसका भी ख्याल रखना चाहिए। बल्कि इसकी थोड़ी-बहुत इज्जत करनी चाहिए। कम से कम कटकर अलग हो जाने के बाद इतनी लापरवाही से छोड़ नहीं आना चाहिए। मेरा मतलब है, इतना तो कर ही सकते थे कि उसे उठा लाते और अपने तकिए के नीचे रख लेते। इस तरह तुम सोते वक्त उसे छूकर महसूस कर सकते थे···

तीसरा क्लर्क : प्लीज़ ! प्लीज़। बन्द करो यह चर्चा। मुझसे नहीं बर्दाश्त होता। नहीं बर्दाश्त होता···

पहला क्लर्क : **(उठकर तीसरे क्लर्क के निकट आकर)** मैं नहीं जानता था कि इससे तुम्हें तकलीफ होगी। लेकिन मैं क्या करता, वे लोग ट्राम की खिड़कियों में भी सींखचे लगा जो देते हैं। पता नहीं वे लोग सींखचे क्यों लगा देते हैं···**(कुछ रुककर)** और फिर मैं तो इसे भूल गया हूँ। मैं तो समझने लगा हूं जैसे मैं हाथ के बजाय सेनिटेरी टावेल्स के एक बण्डल के साथ ही पैदा हुआ था। **(दूसरे क्लर्क की ओर इशारा)** उसने ही याद दिला दी। बल्कि मैं यह भी कहूंगा कि मेरा यह दूसरा हाथ है न, मैं इसके बारे में भी ध्यान नहीं देता। और ध्यान देने से फायदा भी क्या है ? मुझे खुद नहीं पता कि इस हाथ का क्या इस्तेमाल हो सकता है···

दूसरा क्लर्क : तुम्हारे बारे में इन्क्वारी भी तो होगी···डिसिप्लिनरी कार्यवाही···

डिस्पैचर : सैण्ट्रल सिविल सर्विस, क्लासिफिकेशन कण्ट्रोल एण्ड अपील रूल्स···रूल चौदह···

कोरस : सेन्ट्रल सिविल सर्विस क्लासिफिकेशन कण्ट्रोल एण्ड अपील रूल्स·· रूल चौदह।

[सन्नाटा]

डिस्पैचर : बुरी बात है। **(थोड़ा सोचकर)** मेरा मतलब है यह अच्छा नहीं हुआ। **(क्लर्क दो से)** तुम्हारा क्या ख्याल है, मैं ठीक कह रहा हूं न ? **(रुककर)** वैसे यह अच्छा नहीं हुआ।

चपरासी : अच्छा हुआ।

डिस्पैचर : क्या मतलब ?

चपरासी : अच्छा हुआ।

डिस्पैचर : क्यों ? **(चपरासी जवाब नहीं देता)** डिस्पैचर निकट जाता है। तुम अच्छा क्यों कह रहे हो ?

चपरासी : कम से कम मरी औरत की बात तो खत्म हुई। मुझे मितली आने लगती है।

डिस्पैचर : **(संतुष्ट होकर)** ओह।

चपरासी : और फिर इन्कुआरी···क्या इन्कुआरी ?

डिस्पैचर : हां, इन्क्वायरी ।···क्या इन्क्वायरी ? बात तो सही है। हाथ में है या नहीं है ।···यह पर्सनल है···निजी··· (जोश से) यह हमारा निजी मामला है वैसे, रूल्स ऐसा नहीं कहते···आई टेल यू··आई मीन फण्डामेंटल, रूल्स, मेड बाई गवर्नर जनरल इन काउंसिल । (पहले क्लर्क के निकट जाकर) तुम क्या सोचते हो इसके बारे में ? मेरा मतलब है इस इन्क्वायरी के बारे में ?

दूसरा क्लर्क : या हाथ के बारे में ?

डिस्पैचर : हाथ के बारे में ?···हाँ हाथ के बारे में भी । लेकिन खास तौर से इन्क्वायरी के बारे में क्या सोचते हो ।

पहला क्लर्क : मैं क्या सोच सकता हूं ।

डिस्पैचर : (निराश होकर) ओह ! लेकिन एक बात मैं बताऊँ··· यह बिल्कुल निजी मामला है । सर्विस के मामले में तो ठीक है । गवर्नमेंट-सर्विस गवर्नमेंट है·· गवर्नमेण्ट मामूली चीज़ नहीं होती । (दूसरे क्लर्क से) क्यों ?

दूसरा क्लर्क : बल्कि बहुत पावरफुल चीज़ होती है । हमारे यहाँ इस हिन्दुस्तान में सबसे बड़ी है ।

डिस्पैचर : एक बार मैं मिला था । मैं गवर्नमेंट से मिला था ।

दूसरा क्लर्क : ये कैसे हो सकता है ?

डिस्पैचर : बिल्कुल हो सकता है । मेरे साथ हुआ है । जब मैंने पहली बार सरकार में नौकरी की थी तो सरकार ने मुझे अपाइंटमेंट लैटर दिया था । उसमें मुझे 'डियर सर' लिखा गया था । यू नो···बस उसी दिन सरकार मुझसे मुखातिब हुई थी । उसके बाद अब वह मुझसे मुखातिब नहीं होती । तुमसे भी नहीं होती होगी । तुम गौर करना । अब सरकार अगर मुझसे कुछ कहना चाहती है तो कहती है···उसे इत्तिला दी जाती है···उसे हुक्म दिया

जाता है···डी० ओ० लेटर···क्या···वह लेटर नहीं होता । योर्स सिसियरली···नहीं कुछ नहीं होता···बस दस्तखत होता है···आफिस आर्डर नम्बर सच एण्ड सच, डेटेड सच एण्ड सच···

कोरस : आफिस आर्डर नम्बर सच एण्ड सच, डेटेड सच एण्ड सच । सब्जेक्ट···डिसिप्लिनरी एक्शन अण्डर रूल फोर्टीन आफ सेन्ट्रल सिविल सर्विस क्लासिफिकेशन कण्ट्रोल एण्ड अपील रूल्स···

डिस्पैचर : (अकेले) आफ···सेण्ट्रल सिविल सर्विस क्लासिफिकेशन कण्ट्रोल एण्ड अपील रूल्स । मैं कह रहा था । मैं तो जानता हूँ । और सच यह है कि कानून कायदा रटा हुआ है मुझे । मैं कहता था न, क्या ख्याल है तुम्हारा ?··· अपील रूल्स···

दूसरा क्लर्क : हाँ, अपील रूल्स । उस किताब का क्या नाम था ?

डिस्पैचर : फण्डामेंटल रूल्स ।

दूसरा क्लर्क : नहीं, मैं दूसरी किताब की बात कर रहा हूँ···क्या नाम है उसका ?

डिस्पैचर : (क्लर्क दो की बात से ऊब कर पहले क्लर्क के पास जाता है और गोपनीय ढंग से कहता है) मैं बताता हूं तुम्हें । तुम अपील करो ।

दूसरा क्लर्क : (सोचता हुआ) उस किताब का क्या नाम है ?

डिस्पैचर : (जारी) तुम अपील करो । रूल्स ऐसा नहीं कहते । आई टेल यू···आई मीन···

दूसराक लर्क : (असंतुष्ट होकर डिस्पैचर के कन्धे पर उँगली ठोंकता है ।) उस किताब का नाम क्या है···मुझे अभी याद था···

डिस्पैचर : (क्षुब्ध, उपेक्षा । पहले क्लर्क से) आई विल मोवि-

लाइज़···मैं सपोर्ट इक्ट्ठा करूँगा। ये अंधेर है···

दूसरा क्लर्क : यही मैं भी कह रहा था। अन्याय के बारे में···उस किताब का नाम याद नहीं आ रहा।

डिस्पैचर : (बात काट कर जोर से, हर एक की ओर इशारा करते हुए) ये भी मदद करेंगे···तुम भी करोगे एई···और तुम···सबको मदद करनी है। वी शैल आल हेल्प···

पहला क्लर्क : सुनो मेरी एक मदद कर दो।

डिस्पैचर : वही हम कह रहे थे···तुम लिखो।

पहला क्लर्क : लेकिन मैं लिख कैसे सकता हूं ?

डिस्पैचर : यही मुश्किल है। लेकिन इतना डरने से काम नहीं होता।

पहला क्लर्क : मेरा मतलब है। (अपनी आस्तीन हिलाकर) इस तरह ऊब लगती है। ढीला-ढाला सा लगता है···एक टावेल कहीं से और मिल जाता।

[स्टेनो की ओर देखता है। वह मेज़ पर सिर टिका लेती है।]

डिस्पैचर : टावेल···तुम टावेल के बारे में सोच रहे थे ?

पहला क्लर्क : ढीला-ढाला-सा लगता है। (आस्तीन हिलाता है) मेरा मतलब है अजीब-सा लगता है।

डिस्पैचर : (निराश होकर) खैर वो तो ठीक है।

दूसरा क्लर्क : तुम्हें उस किताब का नाम पता है ? मुझे भी नहीं याद आ रहा है।

डिपैस्चर : (हारकर) ठीक है···फण्डामेण्टल रूल्स ?

दूसरा क्लर्क : नहीं।

डिस्पैचर : कोड आफ काण्डक्ट ?

दूसरा क्लर्क : नहीं।

डिस्पैचर : तुम अब इन्कार नहीं कर सकते कि उस किताब का नाम है अपील रूल्स···ठीक है न ?

[बाहर नारे···"टोडी बच्चा हाय-हाय" लगातार सुनाई देते हैं सब खमोशी से सुनते हैं। दूसरा क्लर्क विंग की ओर बढ़कर बाहर देखता है। नारे जारी।]

डिस्पैचर : कुछ दिखाई दिया ? क्या हो रहा है ?

[दूसरा क्लर्क कुतूहल से देखता है। उत्तर नहीं देता।]

डिस्पैचर : बहुत से लोग हैं ? लेकिन सुनो, दरवाज़े के ज्यादा निकट मत जाओ। इल्लीगल हो जायेगा। (दूसरे क्लर्क की ओर थोड़ा-सा बढ़कर) सुना तुमने···पाँच या उससे ज्यादा आदमी···इल्लीगल हो जायेगा। (और निकट जाकर) मैं कह रहा हूं पाँच या उससे ज्यादा कानूनन जुर्म है न। हो सकता है बाहर पहले से ही पाँच आदमी हों···(खुद भी रुचि लेकर झाँकता है। नारे।) पाँच आदमी से ज्यादा हो सकते हैं। बाहर इल्लीगल हो जायेगा···

दूसरा क्लर्क : पाँच आदमी से बहुत ज्यादा हैं सारी सड़क भरी हुई है···

डिस्पैचर : फिर भी इल्लीगल है···

['टोड़ी बच्चा, हाय-हाय' के नारे और ज्यादा। पहला क्लर्क और चपरासी भी उठकर वहीं एक-दूसरे के कंधों से सट कर देखते हैं। आगे देखने की कोशिश में लड़खड़ा भी जाते हैं।)

चपरासी : वो लोग जुलूस निकाल रहे हैं शायद। पुलिस आ जायेगी···

डिस्पैचर : इल्लीगल है। पुलिस तो पहले से ही है। पाँच आदमी से ज्यादा इल्लीगल है···

[इस बीच तीसरा क्लर्क चुपचाप उठकर मेज़ पर सिर टिकाये बैठी स्टेनो के करीब जाता है।

डरते-डरते उसका सिर छूता है। स्टेनो सिर उठाती है···सुन्दर चेहरे की जगह एक विकृत, भयानक, जला हुआ चेहरा दीखता है। तीसरा क्लर्क घबराकर पीछे हटता है और काँपता हुआ अपनी सीट पर आ बैठता है। स्टेनो फिर सिर मेज पर टिका लेती है।]

डिस्पैचर : मेरा ख्याल है, गोली चल गई। (घबराहट दबा कर अलग हट आता है। मेजों के करीब टहलते हुए) इल्लीगल है पाँच आदमी से ज्यादा···(दुबारा वहीं जाता है) मेरा ख्याल है कई लोग मर गए होंगे।

पहला क्लर्क : गोली कहाँ चली ?

डिस्पैचर : मेरा ख्याल है चली है। गोली की स्पीड कितनी होती है···तुम देख नहीं पाये होगे···गोली जरूर चली है···

[नारे अचानक शोर में बदल जाते हैं।]

पहला क्लर्क : लाठी चार्ज कर रहे हैं। (उत्तेजित)

डिस्पैचर : पाँच आदमी से ज्यादा···इल्लीगल होता है। उन्होंने लाठियों में लोहे के खुर लगा रखे हैं।

दूसरा क्लर्क : खुर ?

डिस्पैचर : हाँ, मामूली लाठियाँ नहीं होती पुलिस के पास। बहुत चोट लगती है।

[घबराहट में उसी तरह फिर हट कर चक्कर लगाता है। इस बार थोड़ी दूर खड़े होकर देखता है।]

डिस्पैचर : अब क्या हो रहा है? मेरी आँखें कुछ कमजोर हैं···लाठी चार्ज अभी हो रहा है न ? वो बाईं तरफ फुटपाथ पर कोई आदमी गिर गया है न ? मेरा ख्याल है उसके सिर से खून बह रहा है। क्यों ? (नारे। कोई उत्तर

नहीं) या हो सकता है, उसकी टाँग से खून निकल रहा हो और गिरते वक्त उसके सिर पर लग गया हो··· अभी···क्यों तुम्हारा क्या ख्याल है आँसू गैस भी छोड़ सकते हैं न ?

[नारे। टियर गैस के गोलों की आवाज ? विंग से पत्थर अन्दर आता है। सभी डर कर पत्थर की ओर देखते हैं। फिर थोड़ा हट कर दुबारा विंग की ओर देखते हैं।]

डिस्पैचर : मैं कह रहा था न आँसू गैस चलेगी। यह गैस डेंजरस होती है। तुम लोग रूमाल नाक पर लगा लो।

[लोग रूमाल नाक पर लगाते हैं। एक पत्थर मेज पर गिरता है। अफसर चौंककर उठता है और इन लोगों की ओर आता है।]

डिस्पैचर : सर, मैं कहता था पाँच से ज्यादा इल्लीगल होता है।

[लोग सकपका जाते हैं।]

अफसर : आप लोग समझते क्यों नहीं ? आखिर यहाँ से क्या देख रहे हैं आप लोग ?

डिस्पैचर : इल्लीगल है···

अफसर : आप लोग उधर से ध्यान हटा नहीं सकते ? बेहतर होता आप लोग काम करते···

डिस्पैचर : इल्ल···(पहले क्लर्क को बोलते देखकर चुप हो जाता है ?)

पहला क्लर्क : उन्होंने लाठीचार्ज के बाद आँसू गैस भी छोड़ी है। मैंने खुद देखा है, उसे मरते हुए···वो मर भी गया होगा···

अफसर : आप लोगों को बाहर देखने की जरूरत नहीं है। अपनी सीटों पर बैठिए···

[लोग सीटों की ओर लौटते हैं। अफसर कुछ

देर बाहर देखता है और जैसे थककर अपने चेम्बर की ओर लौटता है। अन्दर जाने से पहले लोगों की ओर पीठ किए हुए रुक कर बोलता है।]

अफसर : पता नहीं वो लोग ऐसा क्यों करते हैं।

डिस्पैचर : सर···पाँच···इल्ली···(अफसर के देखने पर चुप हो जाता है)

अफसर : (दुबारा लौटकर) पता नहीं इसकी जरूरत क्या है। और फिर इस तरह के नारे···गवर्नमेंट सर्वेण्ट्स हैं···

कोरस : आफिस आर्डर नम्बर सच एण्ड सच। डेटेड सच एण्ड सच···सब्जेक्ट···कर्मचारियों की हड़ताल···

डिस्पैचर : इल्ली···(चुप हो जाता है)

अफसर : आप लोग मुझे समझिए। मैं···मैं इसके खिलाफ नही हूं··· लेकिन इसकी जरूरत ? और फिर ये नारे···आई हेट देम। मुझे नारों से नफरत होती है। आप लोग गलत मत समझिए···लेकिन आखिर फायदा क्या है ? नारे··· हो सकता है···ठीक हैं नारे लेकिन जो अभी तक होता चला आ रहा है उसमें गड़बड़ी पैदा होने का डर होता है। हाऊ कैन वी ? आई मीन···

[लोगों का शोर और इस बार गोलियों की आवाज। विंग की ओर शीशा टूटने की आवाज। कुछ किरचें स्टेज पर भी आती हैं।]

डिस्पैचर : वो लोग गोली चला रहे हैं शायद सर।···

अफसर : (चुपचाप विंग की ओर देखता है)

डिस्पैचर : काफी लोग मरेंगे। मेरा ख्याल है सर, हम लोगों को कानों में उँगली देकर कुहनी पसलियों से सटा कर पेट के बल जमीन पर लेट जाना चाहिए।

[शोर। और गोलियाँ]

अफसर : (खेद के साथ) पता नहीं क्यों करते हैं लोग। फायदा क्या है ?

पहला क्लर्क : लोग कह रहे थे···

अफसर : और फिर·· वायलेन्स···क्यों करते हैं ?···

पहला क्लर्क : लोग कह रहे थे कि यह हमारे लिए भी है।···

अफसर : (अजीब नज़र से उसे घूरता है।)

पहला क्लर्क : (डरकर भी साहस समेटते हुए जल्दी-जल्दी) सभी लोग कह रहे थे···वे लोग हमारे लिए लड़ रहे हैं···

डिस्पैचर : तब और भी अच्छा है। पुराने ज़माने में भी होता था सर···सबके काम बँटे हुए थे। ब्राह्मण सोचते थे, क्षत्रिय लड़ते थे, वैश्य व्यापार करते थे।

पहला क्लर्क : वे लोग···वे लोग···(बाहर का शोर थमता है)

अफसर : अब कोई तरीका नहीं है। (क्लर्क तीन से) मुझे रूल्स की कापी दो और (पहले क्लर्क की ओर इशारा) इसकी पर्सनल फाइल (चेम्बर में जाता है।)

डिस्पैचर : आफिस आर्डर नम्बर सच एण्ड सच, डेटेड सच एण्ड सच। सब्जेक्ट···

[तीसरा क्लर्क उठकर रैक में फाईलें खोजता है।]

कोरस : आफिस आर्डर नम्बर सच एण्ड सच। डेटेड सच एण्ड सच। सब्जेक्ट···डिसिप्लिनरी एक्शन अण्डर रूल फोर्टीन आफ सैण्ट्रल सिविल सर्विस क्लासिफिकेशन कण्ट्रोल एण्ड अपील रूल्स···(सन्नाटा)

डिस्पैचर : (पहले क्लर्क के निकट आकर) तुम्हारी बात का क्या मतलब था ?

पहला क्लर्क : (उत्तर दिये बिना विंग की ओर बढ़कर बाहर देखते हुए) सब खत्म हो गया···अब तो कोई नहीं है वहाँ···

[डिस्पैचर, चपरासी, दूसरा क्लर्क भी आकर देखते हैं।]

दूसरा क्लर्क : लोगों को उठाया जा रहा है। पुलिस वाले घायल लोगों को उठा रहे हैं। सड़क पर कितनी चीज़ें पड़ी हैं। चप्पल चश्मे, झंडे···

डिस्पैचर : किसी का पर्स भी गिर सकता है ?

[पहला क्लर्क बेचैनी से अपनी कटी बाँह टटोलता है।]

दूसरा क्लर्क : सड़क पर खून कितना है।

डिस्पैचर : बहुत से लोग सड़क पर पत्थर ही छोड़ गये हैं···

दूसरा क्लर्क : सड़क पर खून ही खून फैला है···

[तीसरा क्लर्क अचानक जोरों से चीखता है और रैक के पीछे इशारा करके काँपता हुआ पीछे हटता है। चपरासी रैक के पीछे झाँकता है और झुक कर कुछ निकालता है। वह एक बड़े रबर के गुड्डे की बाँह है।]

दूसरा क्लर्क : क्या है ? (बाँह चपरासी से लेता है। खुद देखने के बाद क्लर्क एक को दिखाता है) यह तुम्हारा हाथ है।

पहला क्लर्क : हो सकता है। ठीक से नहीं कह सकता···

दूसरा क्लर्क : लेकिन यह तो बता सकते हो कि तुम्हारा नहीं है।

पहला क्लर्क : मैं कैसे कुछ कह सकता हूँ। हाथ कटने से पहले मुझे इस बात का मौका ही नहीं मिला कि अपने हाथ को पहचानूँ।

डिस्पैचर : खैर, देख लो, हो सकता है तुम्हारा ही हाथ हो।

पहला क्लर्क : (बाँह ले लेता है) क्या मैं इसे अपने पास रख लूँ ?

डिस्पैचर : रख लो, हमारा क्या है।

पहला क्लर्क : मैं·· अच्छा एक बात बताओ, क्या सोते समय मुझे इस हाथ को तकिए के नीचे रख लेना चाहिए ?

दूसरा क्लर्क : मैं तो इसमें कोई हर्ज नहीं मानता।

तीसरा क्लर्क : (घबराकर ऊँची आवाज़ में) मत रखना। तकिए के नीचे मत रखना···

[पहला क्लर्क अचरज से उसे देखता है।]

डिस्पैचर : हो सकता है। हो सकता है इस तरह तुमको बुरे-बुरे सपने···?

पहला क्लर्क : (फीकी हँसी आकर बुझती है।)

डिस्पैचर : हँसे क्यों ?

पहला क्लर्क : हम लोगों को अच्छे सपने वैसे भी नहीं आते।

[लोगों के चेहरे सहसा उदास]

तीसरा क्लर्क : (आश्वस्त होने की दृष्टि से) लेकिन जहाँ तक मुझे याद है, मुझे एक बार सपना आया था···वो सपना···

[लोग उसे सन्देह से घूरते हैं।]

दूसरा क्लर्क : हो सकता है। हो सकता है···हो सकता है, वह सपना न होकर उस जैसी कोई और चीज़ हो··· (निराश होकर अपनी सीट की ओर लौटता है। धीरे-से) हो सकता है वह···

[पहला क्लर्क गुड़िया का हाथ सहसा बाहर विंग में फेंकता है।]

डिस्पैचर : क्यों ? फेंक क्यों दिया उसे ?

पहला क्लर्क : (उत्तेजित) नहीं चाहिए मुझे। चाहे मेरा ही क्यों न हो···कटा हुआ हाथ···(बड़बड़ाता है) मुझे नहीं चाहिए···

[दूसरा क्लर्क और उसके पीछे डिस्पैचर विंग की ओर जाकर बाहर देखते हैं।]

डिस्पैचर : वहीं गिरा होगा, मुझे जरा कम दिखाई देता है न···

दूसरा क्लर्क : ज्यादा ही है···

डिस्पैचर : क्या ?

दूसरा क्लर्क : खून । सारी सड़क पर खून फैला हुआ है ।

पहला क्लर्क : (निकट आते हुए) जरा हटना···

डिस्पैचर : क्यों ?

पहला क्लर्क : मैं उसके बजाय कुछ और ले लूँगा ।

डिस्पैचर : (रोकते हुए) अरे, बाहर मत जाना ··

पहला क्लर्क : (छुड़ाते हुए) वो है · मैं वही उठा लूँगा ··वह झंडा बल्कि ठीक चीज़ वही है । इस बाँह में टावेल कम है मुझे बड़ी ऊब लगती है ।···छोड़ो···झंडा ज्यादा अच्छा रहेगा···हटो···नज़दीक ही है···

[छुड़ाकर उन्हें लगभग धकेलता हुआ विंग में चला जाता है]

डिस्पैचर : (दूसरे क्लर्क को हटाते हुए) अब कोई फायदा नहीं । अब हम लोग कुछ नहीं कर सकते । वह खुद ही चला गया तो हम क्या कर सकते हैं···

[लोग उधर से हट जाते हैं ।]

[डिस्पैचर कई बार उठ-उठ कर अपनी कुर्सी को ठीक से रखता है । तीसरा क्लर्क उठकर स्टेनो की ओर बढ़ता है ।]

दूसरा क्लर्क : (अखबार से) दिनाँक 14 फरवरी । पुराने बाजार की चौथी गली के एक मकान में रहने वाली 28 वर्षीय महिला ने फाँसी लगाकर आत्महत्या कर ली । कहा जाता है कि महिला का उसके पति से कुछ अरसे से सम्बन्ध बिगड़ गया था ।···

[तीसरे क्लर्क के स्टेनो के करीब पहुँचते ही स्टेनो फिर अपना सिर मेज पर से उठाती है। उसका चेहरा उसी तरह जला हुआ, डरावना दीखता है ।]

तीसरा क्लर्क : नहीं ।

[स्टेनो फिर सिर नीचे कर लेती है ।]

[दूसरा क्लर्क और डिस्पैचर उन्हें देखते हैं ।]

डिस्पैचर : क्या बात है जी ? तुम उसे छूने जा रहे थे ?

तीसरा क्लर्क : (घबराई आवाज में) नहीं नहीं ।

चपरासी : पता नहीं क्यों लोग···पता नहीं क्यों···

डिस्पैचर : छूने से कोई फायदा नहीं है भाई । मगर सुनो, तुम्हारा सचमुच ही कोई रिश्ता नहीं है न ?

तीसरा क्लर्क : हाँ है । रिश्ता है और मैं अब डरता नहीं । मैं अब किसी से नहीं डरता···

डिस्पैचर : तुम्हारा रिश्ता है । यही मैं भी कहता था ।

तीसरा क्लर्क : और मैं अब डरता नहीं हूं ? समझे ।

डिस्पैचर : एक आदमी के एक भतीजी थी (दूसरे क्लर्क से) सुन रहे हो ?

दूसरा क्लर्क : (बिना सुने तीसरे क्लर्क से) स्टेनो तुम्हारी क्या है ?

तीसरा क्लर्क : अब मैं नहीं डरता । और इसमें···कुछ भी गैर कानूनी नहीं है ।

[बाहर थोड़ा-सा अस्पष्ट शोर]

डिस्पैचर : (बाहर देखते हुए) मैं तुम्हें बता रहा था न ?

[अफसर घंटी बजाता है। लोग खामोश । चपरासी अन्दर जाकर कुछ सुनता है, और बाहर आकर स्टेनो के पास खड़ा हो जाता है।].

चपरासी : पता नहीं लोग··· (हल्की उबकाई)

डिस्पैचर : क्या बात है ?

चपरासी : (इशारे से) साहब बुला रहे हैं, पता नहीं क्यों···

डिस्पैचर : मिस रूपा को ? ओह···

[स्टेनो सिर उठाती है। चेहरा पहले जैसा सुन्दर दीखता है चुपचाप उठकर अफसर के चेम्बर में जाती है। तीसरे क्लर्क का हाथ जैसे उसे मना करने के लिए उठता है लेकिन फिर रुक जाता है।]

दूसरा क्लर्क : (पहले क्लर्क से) मेरा ख्याल है तुम्हें कह देना चाहिए कि तुम्हारा उससे रिश्ता है···

पहला क्लर्क : मैं डरता नहीं हूं।

[चुप होकर खड़ा रह जाता है। स्टेनो अन्दर जाते ही साड़ी उतारना शुरू कर देती है।]

अफसर : (थोड़ा सा घबराकर) क्या है ? व्हाट आर यू डूइंग ?

स्टेनो : मैं समझी···मैं समझी आप कुछ करेंगे। (रुक जाती है)

अफसर : करेंगे ? अरे···पागल हुई हो ;

[उठकर दरवाजा बन्द करता है।]

दूसरा क्लर्क : तुम्हें कहना जरूर चाहिए।

डिस्पैचर : इल्ली···

पहला क्लर्क : (बीच में बोल उठता है) मैं अब नहीं डरता।

[अफसर के दरवाजे की ओर बढ़ता है। दरवाजे पर ठिठक जाता है।]

अफसर : (संयत होकर) रूपा, तुम्हें याद है सुबह हमने यहाँ इस मेज के पीछे लेट कर करने की कोशिश की थी · क्या हुआ था···जानती हो···

डिस्पैचर : इल्ल·····

दूसरा क्लर्क : (उकसाते हुए) जाते क्यों नहीं हो ?

[तीसरा क्लर्क उत्तेजित, कसमसाता हुआ दरवाजे की ओर थोड़ा-सा बढ़कर फिर ठिठक जाता है।]

अफसर : (थोड़े अन्तराल के बाद) रूपा याद है कभी हमारे पाँव में कुर्सी अड़ जाती थी, कभी घुटने से मेज़ की टाँग टकरा जाती थी, कभी ··क्यों होता था ऐसा ? मैंने आफिस में कभी नहीं किया। आफिस में करने की आदत नहीं है। कुछ न कुछ गड़बड़ हो जाना स्वाभाविक है। सोचता था ··अच्छा, तुम्हारा क्या ख्याल है, हड़ताल जरूर होगी ?

[तीसरा क्लर्क दरवाजा खोल कर अन्दर आ जाता है।]

अफसर : तुम्हें अन्दर आने को किसने कहा···

तीसरा क्लर्क : सर···वो···मैंने सोचा···वो फाइल···

अफसर : (नाराज होकर) गेट आउट।

तीसरा क्लर्क : राइट सर। (लौटते-लौटते ठिठककर) मगर सर एक और बात भी थी···

अफसर : आई से गेट आउट।

[तीसरा क्लर्क बाहर आकर दरवाजे से पीठ टिकाकर खड़ा हो जाता है।]

डिस्पैचर : इल्ली ··

दूसरा क्लर्क : उसने क्या कहा ?

तीसरा क्लर्क : मैं ··(हाँफता है) अब डरता नहीं हूं···

दूसरा क्लर्क : (तीसरे क्लर्क के निकट आकर) तुमने क्या कहा था ?

[बाहर कुछ शोर होता है। दूसरा क्लर्क और डिस्पैचर विंग की ओर देखते हैं।]

अफसर : तुम्हारा ख्याल क्या है रूपा, हड़ताल होगी ? (थोड़ा रुककर) हड़ताल, मेरा मतलब है कोई अच्छी बात नहीं

है। लेकिन हड़ताल होने पर हम कल तक के लिए दफ्तर में ही ठहर सकते हैं। तब हम चारपाइयां मँगा सकते हैं। रात में अंधेरा हो जाता है न और फिर चारपाई पर मेज़ या कुर्सी टकराने का डर भी नहीं होता···रूपा···

[उसे कंधे से पकड़ लेता है। वह साड़ी उतारने लगती है। अफसर दुबारा मेज के पीछे जगह बनाने लगता है। विंग में थोड़ा-सा शोर।]

पहला क्लर्क : (स्टेज के बाहर से) ये मेरा है···मेरा हाथ है···मेरा है···

[थोड़ा-थोड़ा शोर चलता रहता है।]

दूसरा क्लर्क : मिस रूपा थी वहाँ ? (विंग की ओर देखते हुए)

तीसरा क्लर्क : हाँ।

डिस्पैचर : (विंग की ओर देखते हुए) इल्ली···

दूसरा क्लर्क : मिस रूपा ने क्या कहा ?

तीसरा क्लर्क : (खामोश)

पहला क्लर्क : (विंग से स्टेज के बाहर)···मैं नहीं दे सकता इसे···ये मेरा है···मेरा हाथ···मेरा हाथ···हाथ मेरा है···

[हल्का शोर]

दूसरा क्लर्क : कितना खून है बाहर, मुझे लगता वह उसी पर फिसल कर गिरेगा। ठंडा-ठंडा लिसलिसा खून उसकी पैंट में भी लग सकता है···

डिस्पैचर : इल्ल···

दूसरा क्लर्क : तुमको साफ कहना चाहिए था। मगर सुनो···साफ-साफ बताओ, वह तुम्हारी कौन है ?

[तीसरा क्लर्क उत्तर नहीं देता। अपनी मेज पर आ बैठता है।]

दूसरा क्लर्क : (उसके करीब आकर) तुम खुद कह रहे थे इसीलिए मैंने पूछा···तुम्हारा···

तीसरा क्लर्क : वो मेरी···वो मेरी···मेरी वो···बीवी है···वो मेरी वीवी है।

दूसरा क्लर्क : ओह ! (विरक्त होकर अलग हो जाता है)

तीसरा क्लर्क : क्यों ? मैंने कोई गलत बात कही है। तुम जानना चाहते थे···

दूसरा क्लर्क : (बात टालकर) वैसे नोट लिख दो (ऊपर देखते हुए) यहाँ रोशनी सचमुच ही बहुत कम है। बत्ती लगवा लेनी चाहिए। तुम नोट लिखो। फिर देखते हैं। यहाँ सचमुच ही काफी अंधेरा है ··बल्ब इतनी जल्दी टूट जाते हैं।···

तीसरा क्लर्क : लेकिन तुमने मेरी बात शायद नहीं सुनी···रूपा ··मिस रूपा मेरी बीवी है मिसेज़···मेरी···तुम्हीं तो पूछ रहे थे ··

[खड़ा हो जाता है।]

दूसरा क्लर्क : (बस्ती की ओर देखते हुए) मैं इसे हिलाकर कुछ देखूँ शायद बल्ब ढीला हो, जल जाय। कभी-कभी रोशनी इत्तफाक से भी आ जाती है···(बाहर थोड़ा शोर) या चली जाती है···

[अफसर स्टेनो के साथ मेज के पीछे लेटता है।]

डिस्पैचर : (बाहर देखते हुए) इल्ली···

चपरासी : (बीच में उबकाई लेकर) कौन कहता था···एक आदमी कौन तो कहता था · मरी हुई औरत की लाश··· कौन तो कहता था···

डिस्पैचर : (रुचि लेता हुआ झपटकर चपरासी के पास आता है।)

हाँ···हाँ···तभी तुम बता रहे थे···वही किस्सा है न ? (उकसाते हुए) क्या कह रहे थे···एक आदमी···मरी हुई औरत · क्या···हाँ ··हाँ, बोली···

चपरासी : (सहसा बोलते-बोलते उबकाई लेकर चुप)

डिस्पैचर : उफ् तुम्हारी ये बीमारी·· आखिर पूरा किस्सा क्यों नहीं बताते तुम ?

तीसरा क्लर्क : (सजग होकर) मैं वही बता रहा था ··

डिस्पैचर : (तीसरे क्लर्क की ओर मुखातिब होकर) क्या बता रहे थे ?

तीसरा क्लर्क : हम लोगों ने मतलब मैंने और रूपा ने पाँच बरस पहले शादी की थी। बिल्कुल ? लेकिन आफ्टर आल रूल्स होते हैं, फण्डामेंटल रूल्स हैं, रूपा अगर···मेरा मतलब है दफ्तर में रूल्स होते हैं न ··

डिस्पैचर : (निराश होकर) आह, मैं समझा वो वाला किस्सा है··· (चपरासी से) तुम ठीक से बताओ न ··वो औरत···हाँ, उसकी लाश वह नदी से निकाल लाता था · फिर ?··· ···उसके कपड़े उतारता था···

तीसरा क्लर्क : मैंने अभी अपनी बात पूरी नहीं की न।

[डिस्पैचर उपेक्षा करता है।]

दूसरा क्लर्क : (बाहर घूरते हुए) वो किस्सा कभी नहीं बताएगा, मैं शर्त लगा सकता हूँ। (बाहर कुछ शोर) ओह, गिरा मेरा ख्याल है वह किसी ईंट से टकरा गया है···मगर वहाँ खून भी बहुत है···उस पर भी पैर फिसल सकता है···

[चैम्बर के अन्दर अफसर के पैर से स्टूल फिर गिर पड़ता है। डिस्पैचर और दूसरा क्लर्क चौंकते हैं। तीसरा क्लर्क आहत दृष्टि से दरवाजे की तरफ देखता है। डिस्पैचर दरवाजे के सूराख से अन्दर झाँकता है। दूसरा क्लर्क भी वहां आ जाता है। डिस्पैचर आसानी से उसे जगह दे देता है।]

डिस्पैचर : तुम देखो। ध्यान से देखना। मेरी आंखें थोड़ी कमजोर हैं न। ध्यान से देखो और मुझे बताते जाओ।

तीसरा क्लर्क : (विह्वल) क्या हो रहा है वहाँ ?

डिस्पैचर : मुझे बताओ न क्या दिखाई दे रहा है।

[बाहर शोर]

पहला क्लर्क : (तेजी से भागता हुआ अन्दर आता है। उसके कपड़ों में खून लगा हुआ है। उसने एक छोटी लकड़ी में लगा हुआ बड़ा-सा सुर्ख रंग का झण्डा पकड़ रखा है जिसे वह सावधानी से कटी बांह वाले कंधे पर टिका कर थामे है) ये ऐसा था नहीं। इसका कोई और रंग रहा होगा। मगर वहाँ खून बहुत था। वहीं से तो उठाया है इसे। खून की वजह से यह भी लाल हो गया।···

तीसरा क्लर्क : (उसके रुकते ही बोल पड़ता है।) मैं अभी कुछ बता रहा था। मैं कह रहा था···

पहला क्लर्क : (उसी तरह थामे हुए झंडे को हसरत से देखते हुए) थोड़े दिन यह यहाँ रह जाय तो लगेगा जैसे मैं इसी के साथ पैदा हुआ था हाथ के बजाय यहाँ एक खून-भरा झंडा ही था···

तीसरा क्लर्क : इतने दिन हुए और तो कभी मैंने यह बताने की कोशिश नहीं की, आज मैं बताना चाहता था···तुम्हें सुनने में एतराज़ है कोई ?

पहला क्लर्क : एतराज़ नहीं बिल्कुल नहीं।

तीसरा क्लर्क : फिर मैं तुम्हें सुनाऊँ ? वो मेरी बीवी थी···मैंने कभी बताया नहीं·· पर यह सच है···

डिस्पैचर : (अचानक पहले क्लर्क के झंडे को देखकर) इल्ली···

[इसी समय एक सिपाही छोटा-सा डंडा लिए झपटता हुआ अन्दर आता है।]

पहला क्लर्क : (आतंकित होकर झंडे को बचाते हुए)नहीं। मेरा हाथ··· मेरा···नहीं दूँगा मैं···मेरा हाथ···

[सिपाही उसे छीनता है। पहला क्लर्क लड़खड़ा कर गिर जाता है लेकिन झंडा छोड़ता नहीं। सिपाही उसे पीटता है।]

पहला क्लर्क : मेरा हाथ···नहीं···मैं · नहीं दूँगा ·

[दूसरा क्लर्क और डिस्पैचर मुड़कर उसे पिटते देखते हैं और दूसरा क्लर्क दरवाजे के छेद से झाँकने लगता है।

डिस्पैचर : इनकी लाठियों में लौहे का खुर होता है। बहुत चोट लगती है···

[अफसर आधा उठकर सुनने की कोशिश करता है]

दूसरा क्लर्क : (छेद से आंख लगाए हुए) खुर ?

डिस्पैचर : हाँ, लाठी में लोहे का खुर होता है। अन्दर क्या हो रहा है ? हटो, जरा मैं देखूँ। (वह हटता नहीं) तुम बताते क्यों नहीं, अन्दर क्या हो रहा है ?

[सिपाही और ज्यादा पीटता है।]

पहला क्लर्क : मैं नहीं छीनने दूँगा · मेरा हाथ···

[सिपाही उसे पीटते हुए झँडा पकड़ कर विंग की ओर घसीटता है।]

पहला क्लर्क : (विंग के करीब तक घिसट जाने के बाद जानवर की

तरह चीखता है और फिर अचेत होकर घिसटता चला जाता है।)

[उसके जाने के बाद सन्नाटा। डिस्पैचर और दूसरा क्लर्क निर्भय होकर विंग की ओर देखते हैं।]

डिस्पैचर : इल्ल···

[तभी रुक जाता है। तीसरा क्लर्क सहसा मेज़ पर चढ़ता है और किसी रस्सी को घुमा कर ऊपर फँसाने के लिए उछालता है। दो-तीन बार में रस्सी ऊपर लटक गई लगती है। क्लर्क उसमें फंदा बना कर उसकी मजबूती जाँचने का नाटक करता है और फंदा गर्दन में डाल लेता है। उसके इस समूचे मूक अभिनय के दौरान डिस्पैचर, चपरासी, दूसरा क्लर्क उसके करीब आकर ऐसे खड़े हो जाते हैं गोया मदारी का तमाशा देख रहे हों। अफसर और स्टेनो उठकर कपड़े पहनने लगते हैं।]

दूसरा क्लर्क : रस्सी का जादू·· रोप ट्रिक नहीं है। वो सचमुच मरने जा रहा है।

डिस्पैचर : लेकिन यह रस्सी ऊपर खड़ी कैसे हो गई ? (ऊपर देखता है।)

दूसरा क्लर्क : मैं शर्त लगा सकता हूँ वह मरने जा रहा है।

डिस्पैचर : ऐसे तो कोई भी मर सकता है। लेकिन अगर रस्सी मजबूत न हुई तो देख लेना इसको सख्त चोट आएगी···

[तीसरा क्लर्क दो-तीन बार रस्सी के फँदे की जांच करने के बाद गले में पहन लेता है और अचानक गर्दन तिरछी करके हल्के-हल्के हाथ

ऐंठता है और फिर स्थिर होकर झूलने लगता है। दूसरा क्लर्क सीने पर क्रास बनाता है। ठीक इसी वक्त कपड़े सम्भाल चुकने के बाद अफसर और स्टेनो चैम्बर से बाहर आते हैं। अफसर ताज्जुब से तीसरे क्लर्क की लटकती लाश को देखता है और ऊपर रस्सी का सिरा तलाशता है।]

दूसरा क्लर्क : सर, वह मर गया—

डिस्पैचर : इल्ली···(अफसर को देख कर चुप)

अफसर : ये कैसे हो सकता है? क्यों किया ऐसा अभी··· (रूपा से) पूछो इससे व्हाई हैज़ ही इन इट। ही हैज़ नो राइट···

डिस्पैचर : फण्डामेंटल रूल्स मेड बाई गवर्नर जनरल इन काउन्सिल···

कोरस : फण्डामेंटल रूल्स मेड बाई गवर्नर जनरल इन काउन्सिल···हर सरकारी कर्मचारी को इस बात की ताकीद की जाती है कि वह या उसके परिवार का कोई मेम्बर ऐसा काम न करे जिससे सरकार को शर्मिन्दगी उठानी पड़े··

स्टेनो : (ऊपर देखकर) ऐई···(और ज़ोर से) ऐई तुमने ऐसा क्यों किया? तुम्हें कोई हक नहीं था···

कोरस : फण्डामेंटल रूल्स मेड बाई गवर्नर जनरल इन काउन्सिल···हर सरकारी कर्मचारी को इस बात की ताकीद की जाती है कि वह या उसके परिवार का कोई सदस्य ऐसा काम न करे जिससे सरकार को शर्मिन्दगी उठानी पड़े···

[एकदम सन्नाटा। दो सेकेण्ड बाद जैसे बहुत

दूर से क्लर्क तीन की आवाज़ उभरती है और धीरे-धीरे तेज़ होती जाती है।]

तीसरा क्लर्क : (ज्यों का त्यों लटका रहता है। उसकी आवाज़ पृष्ठभूमि से) ठीक हुआ···अच्छा हुआ नहीं सुना। और वैसे कहने लायक था भी क्या? कोशिश मगर बहुत की मगर अच्छा हुआ कि किसी ने नहीं सुना। मिस रूपा··· कुमारी कंचन रूपा मेरी कोई नहीं। सचमुच! सोचता था···पाँच बरस मिस रूपा ने इस दफ्तर में काम किया, पाँच बरस के अरसे में एक किस्सा मेरे दिमाग में फफूँद की तरह पैदा हो गया। वैसे सर, वह किस्सा बुरा नहीं है। उस किस्से में बस एक पात्र और है, वह है चपरासी। कंचन रूपा जिस दिन से दफ्तर में आई उसी दिन से किस्से की यह फफूँद पड़नी शुरू हो गई। बस अचानक ही हुआ। मैंने सोचा ··मैंने रूपा से शादी कर ली है। फिर मैंने कई रोज़···कई रोज़···यानी में रूपा के साथ···यानी···और फिर मैंने सोचा पति-पत्नी एक ही दफ्तर में काम नहीं कर सकते। रूल है न सर, तो फिर मैंने सोचा यानी मैंने तय किया कि दफ्तर में हम दोनों अपने को अविवाहित बताएँगे और एक दूसरे से बात भी नहीं करेंगे। बातें हम लोग वैसे भी नहीं करते थे। फिर हमने तय किया कि हम करेंगे कुछ नहीं। करने से बच्चा आ सकता था···भेद खुल जाता न? पाँच बरस में रूपा को बच्चा नही आया कभी। हाँ, यहाँ तीसरा किरदार भी है चपरासी···आप जानते हैं···और वह कर भी क्या सकता है···तीन रुपये मिलते हैं उसे। अगर वह किसी को नसबन्दी के लिए राजी कर ले। मैं अपनी कथा को ज्यादा सच बनाना चाहता था। मेरी वजह से भी चपरासी को तीन रुपए मिले ··

देखिए, वैसे बच्चा आने का डर होता है न···लेकिन यह सब···आप यकीन कीजिए···बिल्कुल झूठ था · एक सपना जैसा···वैसे सपना हम लोगों को आता ही कहाँ है सर, मैं ठीक कह रहा हूँ सर···सपना हमें सपना देखना भी तो नहीं आता न सर · सर···सर ·· आप···

[एकाएक खामोश सन्नाटा छा जाता है।]

डिस्पैचर : (तीसरे क्लर्क से) तुमने क्या कहा था ? रूपा से शादी कर ली···फिर कई रोज़ रूपा के साथ · रूपा के साथ क्या ? (सन्नाटा) क्यों, तुमने बताया नहीं मैं तो पहले ही पूछना चाहता था···कई रोज़ रूपा के साथ क्या ?

[अफसर सीने पर क्रास बनाता है। बारी-बारी से स्टेनो और दूसरा क्लर्क और फिर चपरासी भी सीने पर क्रास बनाकर चुपचाप खड़े होते हैं। उन्हें देखकर डिस्पैचर भी सीने पर क्रास बनाता है।]

डिस्पैचर : (इधर-उधर देखकर) मैं तो पहले भी सुनना चाहता था तुम्हारा किस्सा ·· मैं ··तुमने बताया ही नहीं और खास तौर से · कई रोज़ रूपा के साथ · क्या ?

○○○